स्वदेशी उत्पाद कैसे बनाएं

शांति लाल ठक्कर

लेखन सहयोग– सन्त समीर

प्रकाशक

स्वराज प्रकाशन समूह

स्वदेशी उत्पाद कैसे बनायें

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2002

प्रतियाँ : 1000

प्रकाशक :
स्वराज़ प्रकाशन समूह

मूल्यः 15 रुपये

भूमिका

आजादी बचाओ आंदोलन आज एक नई भूमिका में आपके सामने है। अभी तक तो आंदोलन केवल विदेशी सामानों के बहिष्कार की बात करता था। लेकिन अब स्वदेशी सामानों को बनाने वाले उत्पादकों की फौज खड़ी करने का काम भी शुरू कर रहा है।

आंदोलन की इस नई दिशा की शुरूआत के लिए 'स्वानंद अनुसंधान पीठम्' ने पृष्ठभूमि तैयार की है। 'स्वानंद' एक ट्रेड मार्क है जो स्वदेशी उत्पादों को उनकी गुणवत्ता के लिए दिया जाता है। यह अपने आप में अनोखा ट्रेड मार्क है, जो यह बताता है कि कौन सा सामान स्वदेशी और गुणवत्ता वाला है।

स्वदेशी उत्पादों को बनाने के फार्मूलों की किताब बनाने का विचार काफी पहले से हम लोगों के दिमाग में घूम रहा था। लेकिन उसे साकार रूप देने के लिए श्री शांति भाई ठक्कर ने पहल की। आंदोलन के वरिष्ठ साथी श्री संत समीर जी ने इस किताब के निर्माण और संयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस किताब को प्रकाशित करने का उद्देश्य देश भर में, विशेष कर गाँवों में फैली बेरोजगारी को राष्ट्रहित के लिए तैयार करना है। हमें उम्मीद है कि इस किताब के माध्यम से न केवल लोगों को रोजगार मिलेगा, बल्कि देश में बेरोजगारी की वजह से बढ़ रहे अत्याचार, लूटखोरी, हिंसा आदि पर भी काबू पाया जा सकेगा।

स्वदेशी रोजगार के इस अभियान में यह पुस्तक पहली कड़ी है। आगे अभी तीन–चार किताबों का निर्माण चालू है। आंदोलन की योजना है कि अलग–अलग क्षेत्रों (कॉस्टमेटिक के सामान, रासायनिक उत्पाद, खाद्य उत्पाद, खेती के उत्पादों से तैयार होने वाले ग्रामीण रोजगार) के उत्पादों के फार्मूलों पर अलग–अलग किताबें बनाई जायें। आंदोलन के अनेक साथियों ने, जो अपने–अपने क्षेत्रों के अनुभवी व्यवसायी भी हैं, अलग–अलग क्षेत्रों की किताबें बनाने की जिम्मेदारी ली है। हमें उम्मीद है कि अगले दो–तीन महीनों में वे किताबें तैयार हो जाएंगी।

हमें ऐसा लगता है कि आंदोलन द्वारा शुरू किए गये इस नए अभियान से न केवल आंदोलन को बल्कि देश और समाज को भी एक नई दिशा मिलेगी।

राजीव दीक्षित

लेखक के दो शब्द

इस पुस्तिका के लिखने के पीछे उद्‌देश्य यह रहा है कि लोग अपनी जरूरत की अधिकांश वस्तुएं अपने घर में ही बना सकें या चाहें तो थोड़ी सी पूँजी लगाकर अपना उद्योग–धन्धा शुरू कर सकें और स्वावलंबी बनें। मेरी उत्कट इच्छा है कि भारत की धरती से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का साम्राज्य नेस्तनाबूद हो और यह देश स्वावलंबी और उद्योगी राष्ट्र बनकर एक बार फिर से सारे संसार का सरताज बने। परंतु, यह तभी हो सकता है जबकि हम लोग विदेशी सामानों के मोहपाश से छूटकर अपने जीवन में स्वदेशी अपनाने का संकल्प धारण करें।

आज इस देश में बेरोजगारों की एक विशालकाय फौज खड़ी हो गई है। यह हरकत में आएगी तो देश का ही विनाश करेगी। सरकारों के पास इस समस्या का कोई समाधान नहीं है। वे समाधान के प्रति ईमानदार भी नहीं हैं, क्योंकि बेरोजगारी जैसे मुद्‌दों के सहारे उनकी राजनीति सधती है। ऐसे में देश के बेरोजगार युवकों से मेरी अपील यही है कि वे नौकरियों के पीछे बहुत समय न गँवाते हुए स्वदेशी उद्योग–धन्धे खड़े करने के काम में लगें तो उनका और राष्ट्र, दोनों का भला होगा। इस देश में स्वावलम्बन की अपार संभावनाएं हैं। प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है व पेड़–पौधों, जीव–जन्तुओं, फसलों की विविधताएं हैं; खनिज संसाधन हैं; काम करने वाले अनगिनत हाथ हैं; और असली बात यह है कि हमारे देश में प्रतिभा है। जरूरत सिर्फ दृढ़ संकल्प जगाने की है, हम बहुत कुछ कर सकते हैं। सचमुच आज देश में स्वदेशी व्यवस्था कायम करने की महती आवश्यकता है, अन्यथा, बहुराष्ट्रीय कंपनियों की खतरनाक किस्म की आर्थिक गुलामी से हम बच नहीं पाएंगे।

स्वदेशी उद्योग खडे करने की मेरी कोशिश काफी समय से चलती रही है। मेरी कोशिशों के चलते अब तक 40 उद्योग खड़े भी हो चुके हैं। जिन लोगों ने उद्योग लगाये हैं वे अब अच्छा–भला स्वावलम्बी जीवन जी रहे हैं। इस पुस्तिका के जरिए उम्मीद करता हूँ कि और भी तमाम लोगों को स्वावलम्बन की प्रेरणा मिलेगी। वैसे अपने अनुभवों को पुस्तकाकार सँजोने की योजना अचानक ही मेरे मन में आयी। दरअसल आज़ादी बचाओ आंदोलन के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव भाई दीक्षित से महाराष्ट्र के मुर्तिजापुर शिविर में मुलाकात हुई तो उन्होंने ही मुझे इसकी प्रेरणा दी। राजीव भाई ने जब स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण हेतु फॉर्मूलों की पुस्तक लिखने की सलाह मुझे दी तब साथ में मेरी मदद के लिए लेखन और संपादन की जिम्मेदारी 'स्वदेशी संवाद सेवा' के संपादक श्री सन्त समीरजी को दी। इससे मुझे काफी सहूलियत हो गई। श्री समीरजी ने मेरे साथ बैठकर इन फॉर्मूलों को लिपिबद्ध करके पुस्तकाकार रूप दिया है इसके लिए मैं उनका और आंदोलन का बहुत आभारी हूँ।

शांति लाल ठक्कर

विषय सूची

(1) नहाने का साबुन

फार्मूला–1

सामग्री –

(1) नारियल तेल (खुला) – 1 किलो ग्राम
(2) कास्टिक पोटाश – 250 ग्राम
(3) चने का बेसन – 250 ग्राम
(4) पानी – 1 लीटर
(5) रंग (तेल में घुलने वाला) – 2 ग्राम (1 चुटकी)
(6) सेंट (इच्छानुसार) – आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि –

(1) प्लास्टिक के बर्तन में 1 लीटर पानी में 250 ग्राम कास्टिक पोटाश डालकर लकड़ी से अच्छी तरह चलाकर घोलें। इस घोल को लेई कहते हैं। इस घोल को 5–6 घंटे डिस्चार्ज (ठण्डा) होने के लिए छोड़ दें।

(2) दूसरे बर्तन में 1 किलो तेल में 250 ग्राम बेसन डालकर अच्छी तरह मिलाएं, ताकि तनिक भी गाँठ न रहे।

(3) 5–6 घण्टे तक ठण्डा हो जाने पर कास्टिक पोटाश के घोल की धीरे–धीरे तेल बेसन के घोल में डालकर लकड़ी के डंडे से मिलाकर तेजी से घुटाई करते जाएं। यह घोल धीरे–धीरे गाढ़े पेस्ट में बदलता जाएगा। घुटाई सामान्यतः 4–5 मिनट तक की जाए। जितनी घुटाई की जाएगी, उतना ही अच्छा साबुन बनेगा। यह कार्य 2 व्यक्ति मिलकर अच्छी तरह कर सकते हैं।

(4) साबुन पेस्ट को अब लकड़ी के साँचें अथवा बर्तन में जिसमें साबुन को जमाना है, भर दें तथा 10–12 घण्टे के लिए छोड़ दें। जमने के बाद निर्धारित साईज की टिकिया बनाएं और पैकिंग करें।

फार्मूला–1

सामग्री–

(1) सोयाबीन तेल – 500 ग्राम
(2) नारियल तेल – 500 ग्राम

(3) कास्टिक सोडा	–	100 ग्राम
(4) घुलनशील रंग	–	आवश्यकतानुसार
(5) ग्लिसरीन	–	10 ग्राम
(6) सुगंध	–	5 ग्राम

बनाने की विधि –

(1) सबसे पहले सोयाबीन व नारियल के तेल को एक में मिलाकर कड़ाही में गुनगुना गरम करें।

(2) इसके बाद 1 ली0 पानी में कास्टिक सोडा मिलाकर इसे तेल में मिलाते हुए घोंटते जाएं। पानी ज्यादा हो तो नमक का छिड़काव करें, इससे साबुन पेस्ट और पानी अलग–अलग हो जाएंगे।

(3) साबुन पेस्ट अलग निकालकर इसमें रंग, ग्लिसरीन व सुगंध मिलाकर प्लास्टिक डिब्बे में रख दें। तीन दिन में साबुन जम जाएगा।

(4) अब तार से कटिंग करके डाई के जरिए मनचाहा आकार दीजिए।

सावधानियाँ –

(1) कास्टिक पोटाश अथवा इसके घोल को हाथ से न छुएं।

(2) कास्टिक पोटाश को खुला न छोड़ें।

(3) एल्यूमीनियम या अन्य धातु के बर्तन का प्रयोग न करें।

(4) कास्टिक पोटाश के घोल को कम से कम 5–6 घण्टे ठण्डा होने के बाद ही बेसन के घोल में साबुन बनाने हेतु मिलाएं। गर्म में मिलाने से घोल फट सकता है और साबुन खराब हो सकता है। जमने में भी दिक्कत हो सकती है।

(5) यदि कास्टिक पोटाश उपलब्ध नहीं होता है तो इसके स्थान पर 175 ग्राम से 200 ग्राम तक कास्टिक सोडा भी इस्तेमाल किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में 50 ग्राम ग्लिसरीन भी इस्तेमाल की जाती है। गाढ़ा पेस्ट बन जाने पर ग्लिसरीन धार से डालकर पेस्ट में मिक्स की जाती है।

(2)– नहाने का गोमय साबुन

सामग्री–

(1) नीम तेल	–	20 किलो
(2) खोपरा तेल	–	1 किलो
(3) मुल्तानी मिट्टी	–	16 किलो
(4) गेरू	–	4 किलो
(5) कास्टिक सोडा	–	2 किलो
(6) सिलीकेट	–	8 किलो
(7) गोमूत्रा तथा गोबर रस	–	20 किलो

बनाने की विधि –

(1) सर्वप्रथम नीम तथा खोपरे का तेल गुनगुना गरम करें।

(2) अब इसमें थोड़ी–थोड़ी मात्राा में कास्टिक सोडा डालते हुए घोंटते जाइए।

(3) इसके बाद इसमें गोमूत्रा तथा गोबर का रस मिलाकर मुल्तानी मिट्टी व गेरू पाउडर मिलाइए।

(4) सबसे अंत में सिलीकेट मिलाकर अलग बरतनों में जमा दीजिए। साबुन जम जाने पर तार से कटिंग करके पैकिंग कर लें। यह त्वचा के लिए बहुत ही उम्दा साबुन है।

(3) नहाने का हर्बल सोप (साबुन)

सामग्री –

(1) मुल्तानी मिट्टी	–	1 किलोग्राम
(2) आँवला (सूखा)	–	100 ग्राम
(3) नीम की हरी पत्तियाँ	–	100 ग्राम
(4) दही का मट्ठा	–	250 ग्राम
(5) नींबू का रस	–	100 ग्राम
(6) रीठा	–	50 ग्राम
(7) हल्दी	–	25 ग्राम
(8) सुगंध व रंग	–	इच्छानुसार

बनाने की विधि :–

(1) मुल्तानी मिट्टी को इमामदस्ते में बारीक कूटकर छान लें।

(2) 100 ग्राम नीम की पत्ती को 500 ग्राम पानी में उबालकर छान लें ताकि लगभग 400 ग्राम पानी प्राप्त हो जाय।

100 ग्राम आँवले को तैयार नीम के पानी में 12 घण्टे भिगोकर रख दें। तत्पश्चात् अच्छी तरह मथकर तथा छानकर आँवला पानी तैयार करें।

(3) 50 ग्राम रीठा को 100 ग्राम पानी में 12 घण्टे भिगोकर रख दें। तत्पश्चात् अच्छी तरह मथकर तथा छानकर रीठा झाग पानी तैयार करें।

(4) आँवले के पानी, रीठा झाग पानी को एक जगह मिला दें। इस घोल में मट्ठा (अच्छी तरह मथी हुई दही) तथा हल्दी को डालकर अच्छी तरह मिला दें।

(5) तैयार घोल को मुल्तानी मिट्टी के साथ गूँथकर रख दें। 4–5 घण्टे बाद मिट्टी में 100 ग्राम नींबू का रस तथा रुचि के अनुसार सुगंधि डालकर पुनः अच्छी तरह गुँथाई करें।

(6) उपरोक्त तैयार सामग्री साँचे में डालकर अथवा हाथ से साबुन की टिक्की का आकार देकर छाया अथवा बहुत हल्की धूप में सुखाएं। पूरी तरह सूखने में मौसम के अनुसार 3 से 6 दिन तक लग जाता है।

(7) अच्छी तरह सूख जाने पर पैकिंग करें।

इस साबुन का उपयोग स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी है।

(4) कपड़ा धोने का साबुन (ठण्डी विधि)

सामग्री–

(1) अखाद्य तेल (जमने वाला तेल)	–	1 किलो
(2) कास्टिक सोडा	–	250 ग्राम
(3) कपड़ा धोने का सोडा	–	250 ग्राम
(4) मैदा / बेसन / आटा / सबका मिश्रण	–	500 ग्राम
(5) पानी	–	3 लीटर

बनाने की विधि –

कपड़ा धोने का साबुन जमने वाले तेल से बनाया जाता है। जमने वाले तेल को ठण्डा तेल भी कहते हैं। नीम, महुआ, अरंडी, धान, साल आदि अखाद्य जमने वाले तेल हैं, जिनका प्रयोग सामान्यतः साबुन बनाने में किया जाता है।

(1) 1.5 लीटर पानी बाल्टी एक में लेकर उसमें 500 ग्राम आटा / बेसन / मैदा (जो भी प्रयोग करना है) को अच्छी तरह घोल लें, ताकि गुठली न रह जाय।

(2) दूसरी प्लास्टिक बाल्टी में 1.5 लीटर पानी लेकर 250 ग्राम कास्टिक सोडा डालें और डंडे से चलाएं। घुलने के बाद 250 ग्राम कपड़ा धोने का सोडा भी डाल दें और लकड़ी से ही मिलाएं। अब इसमें 1 किलो तेल एक साथ डाल दें और तुरंत ही एक नंबर की बाल्टी की सामग्री भी एक साथ डाल दें। साथ ही लकड़ी के गोल डण्डे से तेजी से घुटाई करते जाएं। घुटाई सामान्यतः 5 मिनट तक की जाय। इतने समय में ही कास्टिक की गंध आने लगेगी, तब घुटाई बंद कर दें।

(3) बाल्टी से इस सामग्री को जिस बर्तन (सामान्यतः चौकोर / गोल प्लास्टिक टब अथवा ट्रे) में जमाना है, उलट दें तथा 14–15 घण्टे जमने के लिए छोड़ दें। इसके बाद इच्छानुसार आकार की बट्टियाँ काट लें तथा पैकिंग कर दें।

सावधानियाँ –

(1) एल्यूमीनियम या अन्य धातु की बाल्टी का प्रयोग किसी भी स्थिति में न करें।

(2) कास्टिक सोडा को खुला न छोड़ें, अन्यथा वातावरण की नमी सोखकर पानी बन जाएगा।

(3) कास्टिक सोडा अथवा उसके घोल को हाथ से न छुएं।

(4) सोडा बाल्टी में तेल डालने के साथ ही आटे का घोल डालें। यदि आटा घोल डालने में देरी हुई तो आटे का घोल फट जाएगा।

(5) बाल्टी नं. –1 एवं 2 की सामग्री की लुगदी बनाने हेतु घुटाई

कास्टिक सोडा की गंध आने तक ही की जाय। अधिक घुटाई करने पर लुगदी तेल छोड़ देगी और वह जमेगा नहीं।

सामान्यतः वजन बढ़ाने तथा साबुन में कड़ापन लाने के लिए डोलामाइट /स्टोन पाउडर का प्रयोग किया जाता है, परन्तु इससे साबुन की क्वालिटी अच्छी नहीं होती। अनुभव से यह पाया गया है कि आटा या बेसन डालने से कई लाभ होते हैं। इससे ठोसपन व वजन बढ़ने के साथ–साथ साबुन हाथ नहीं काटता, मैल अच्छी तरह हटाता है और कपड़े में कलफ का काम भी करता है।

अनुभव से यह भी पाया गया है कि ताजा बना हुआ साबुन मैल तो काटता है पर झाग कम देता है। वही साबुन 8–10 दिन के बाद मैल काटने के साथ–साथ झाग भी अच्छा देता है।

(5) कपड़ा धोने का साबुन (गर्म विधि)

सामग्री–

(1) सोयाबीन तेल	–	500 ग्राम
(2) खोपरे का तेल	–	50 ग्राम
(3) सिलीकेट	–	500 ग्राम
(4) सोपस्टोन पाउडर	–	500 ग्राम
(5) कास्टिक सोडा	–	100 ग्राम

बनाने की विधि –

(1) सर्वप्रथम दोनों तेल एक में मिलाकर गुनगुना करें।

(2) इसके बाद एक लीटर पानी में कास्टिक सोडा मिलाकर इसे तेल में मिलाते हुए घोंटते जाएं।

(3) एकरस होने के बाद यदि पानी ज्यादा हो तो नमक का छिड़काव करें, इससे पानी अलग हो जाएगा।

(4) अब साबुन अलग कड़ाही में निकालकर, इसमें सिलीकेट मिलाकर खूब घोंटें।

(5) इसे प्लास्टिक डिब्बे में जमा दें तथा तीन दिन बाद तार से कटिंग करिए व डाई में फिट करके मनचाहा आकार दे दीजिए।

सूचना– अगर साबुन कड़ा हो जाए तो सिलीकेट मिट्टी कम डालें।

सावधानियाँ –

(1) प्लास्टिक की बाल्टी का प्रयोग किसी भी स्थिति में न करें।

(2) कास्टिक सोडा को खुला न छोड़ें, अन्यथा वातावरण की नमी सोखकर पानी बन जाएगा।

(3) कास्टिक सोडा अथवा उसके घोल को हाथ से न छुएं।

(6) डिटर्जेण्ट केक

फार्मूला–1

सामग्री–

(1) सोपस्टोन पाउडर	–	10 किलो
(2) स्लॅरी	–	1 किलो
(3) चूना पाउडर	–	500 ग्राम
(4) बोरेक्स (सुहागी)	–	500 ग्राम
(5) कास्टिक सोडा	–	100 ग्राम
(6) यूरिया	–	100 ग्राम
(7) सोडियम लारेल सल्फेट (एस.एल.एस.)	–	50 ग्राम
(8) नीला कलर	–	10 ग्राम

बनाने की विधि –

(1) सर्वप्रथम एक प्लास्टिक टब या बाल्टी में पानी लेकर उसमें सभी सामग्री लकड़ी के डंडे से अच्छी तरह हिलाकर 3 घण्टे वैसे ही रखें। और उसमें पानी डालकर आटे की तरह माड़ें। जरूरत हो तो किंचित पानी मिला लें।

(2) लगभग आधा घण्टा तक अच्छी तरह हिलाते रहने से इसमें गाढ़ापन आने लगेगा, तब इसमें रंग (कलर) व इत्रा (सेण्ट) मिलाकर प्लास्टिक ट्रे में उड़ेल दें।

(3) 24 घण्टे बाद जैसी चाहें वैसी टिकिया काट लें। घर में इस्तेमाल करना हो तो प्लास्टिक कागज पर फैलाएं। बट्टी तैयार है। बिक्री करनी हो तो डाई में जमाएं। इस तरह के कामों में हाथों में प्लास्टिक के दस्ताने जरूर पहनें।

फार्मूला–2

सामग्री–

(1) पाम तेल	–	1 किलो
(2) पानी	–	1 किलो
(3) कास्टिक सोडा	–	250 ग्राम
(4) सोडा ऐश	–	100 ग्राम
(5) ट्राय सोडियम पाली सल्फेट	–	100 ग्राम
(6) अन आयोनीक डिटरजेण्ट	–	50 ग्राम
(7) सोपस्टोन पाउडर	–	250 ग्राम
(8) फोम बुस्टर लिक्विड	–	200 ग्राम
(9) सोडियम सिलीकेट	–	500 ग्राम
(10) ऑप्टीकर ब्राइटनर	–	25 ग्राम
(11) कलर	–	आवश्यकतानुसार
(12) सेण्ट	–	आवश्यकतानुसार
(13) बोरेक्स	–	50 ग्राम

बनाने की विधि –

(1) सर्वप्रथम एक प्लास्टिक टब या बाल्टी में 1 ली0 पानी लेकर उसमें कास्टिक, सोडा ऐश, सोडियम सिलीकेट, ट्राय सोडियम पाली सल्फेट तथा बोरेक्स मिलाकर इस लकड़ी के डंडे से अच्छी तरह हिलाकर 3 घण्टे वैसे ही रखें।

(2) दूसरे प्लास्टिक टब या बाल्टी में 1 किलो पाम तेल लेकर उसमें सोप स्टोन पाउडर, ऑप्टीकर ब्राइटनर मिलाकर अच्छी तरह घोंटकर मिलाइए।

(3) क्रमांक– 2 के तेल में क्रमांक– 1 की सामग्री आहिस्ता–आहिस्ता मिलाइए। साथ ही इसमें फोम बुस्टर लिक्विड तथा अन आयोनीक डिटरजेण्ट मिला दीजिए।

(4) लगभग आधा घण्टा तक अच्छी तरह हिलाते रहने से इसमें गाढ़ापन आने लगेगा, तब इसमें रंग (कलर) व इत्रा (सेण्ट) मिलाकर प्लास्टिक ट्रे में उड़ेल दें।

5) 24 घण्टे बाद जैसी चाहें वैसी टिकिया काट लें।

सावधानी– इस पूरी निर्माण विधि में एल्यूमीनियम के बर्तनों का इस्तेमाल न करें।

(7) वाशिंग पाउडर (पीला)

सामग्री–

(1) कपड़ा धोने का सोडा	–	1 किलो
(2) नमक	–	200 ग्राम
(3) यूरिया	–	200 ग्राम
(4) मैदा	–	50 ग्राम
(5) स्लरी .	–	200 मि. ली.
(6) रंग (इच्छानुसार कलर)	–	5 ग्राम
(7) पानी	–	100 मि. ली.

बनाने की विधि–

(1) प्लास्टिक सीट को फर्श पर बिछा लें। सोडे को प्लास्टिक पर छान लें। तत्पश्चात् बारीक पिसे हुए यूरिया, नमक व मैदा को भी एक–एक कर सोडा के ऊपर छान लें। इन सबको अच्छी तरह एक साथ मिला लें।

(2) 100 मि. लीटर पानी बाल्टी में लें, इसमें 5 ग्राम रंग अच्छी तरह घोल लें।

(3) अब एक व्यक्ति पतली धार से स्लरी धीरे–धीरे बाल्टी में डालता जाए तथा दूसरा डण्डे से अच्छी तरह चलाता रहे। डण्डे से अच्छी तरह चलाते रहने व घुटाई करने से यह लेई की तरह लुगदी बन जाएगा।

(4) लुगदी बन जाने पर इसमें सोडा के साथ बनाया हुआ मिश्रण थोड़ा–थोड़ा डालकर (50–100 ग्राम) डण्डे से अच्छी तरह मिलाते जाएं जब तक सारी नमी सोखकर ठोस गीला पाउडर के रूप में न जाए। मिलाने के दौरान तेज रासायनिक प्रक्रिया होती है और उसमें गर्मी निकलती है, अतः हाथ से न छुएं।

(5) बाल्टी में तैयार मिश्रण को प्लास्टिक सीट पर रखे हुए सोडा मिश्रण (पाउडर) में डालें तथा दोनों हाथ से अच्छी तरह रगड़–रगड़ कर मिक्सिंग करें ताकि कोई रोड़ी न रहने पाए। जितना अच्छा मिक्सिंग होगा, उतनी ही अच्छी क्वालिटी का माल तैयार होगा। इसे छान लें और यदि रोड़ी ऊपर रह जाती है तो उसे फिर रगड़कर मिक्स करें।

(6) इस प्रकार अच्छी तरह समान रूप से छने हुए पाउडर को इच्छानुसार तौल के अनुरूप प्लास्टिक की थैलियों में पैक करें।

उपकरण–

(1) बिछावन के लिए प्लास्टिक सीट (2) प्लास्टिक बाल्टी (3) लकड़ी का गोल डण्डा (सोटा) 2–2.5 फिट लंबा (4) तराजू–बाट (5) आटा छानने

की चलनी, (6) सिलिंग मशीन या स्टेप्लर।

सावधानियाँ–

(1) एसिड स्लरी, रंग व पानी से बने हुए पेस्ट तथा रासायनिक क्रिया के दौरान मिक्चर (मिश्रण) को हाथ से न छुएं।

(2) तेल में घुलने वाला रंग ही प्रयोग करें, रंग अच्छी क्वालिटी का हो।

(3) 10 किलो से अधिक पाउडर तैयार करने के लिए हाथ में गलोब्ज पहन लेना ज्यादा अच्छा है।

(4) पाउडर को रगड़कर मिक्सिंग करने के लिए विशेष ध्यान दें।

(8) डिटर्जेण्ट पाउडर

सामग्री–

(1) कपड़े धोने का सोडा	–	10 किलो
(2) चूना पाउडर	–	500 ग्राम
(3) स्लॅरी	–	1 किलो
(4) बोरेक्स पाउडर (सुहागी)	–	250 ग्राम
(5) नीला कलर	–	10 ग्राम

बनाने की विधि–

(1) इन सारी चीजों को प्लास्टिक कागज पर अच्छी तरह मिलाकर रगड़िए।

(2) अब इसमें कलर और बोरेक्स पाउडर मिलाकर रगड़िए।

(2) सुगंध के लिए सेंटोनिला 10 ग्राम डालकर पैकिंग करें।

सावधानियाँ–

(1) पाउडर रगड़ते समय हाथ में प्लास्टिक के दस्ताने पहनने चाहिए।

(2) पाउडर को रगड़कर मिक्सिंग करने के लिए विशेष ध्यान दें।

(3) एसिड स्लरी, रंग व पानी से बने हुए पेस्ट तथा रासायनिक क्रिया के दौरान मिक्चर (मिश्रण) को हाथ से न छुएं।

(९) डिटर्जेण्ट पाउडर (हाई पावर)

सामग्री–	ए ग्रेड	बी ग्रेड
(1) सोडा ऐश	2 किलो	3 किलो
(2) सोडियम बाय कार्बोनेट	500 ग्राम	500 ग्राम
(3) सोडियम मेंटा सिलीकेट	500 ग्राम	———
(4) सोडियम सल्फेट	500 ग्राम	500 ग्राम
(5) एसिड स्लॅरी	700 ग्राम	500 ग्राम
(6) लिक्विड फोम बुस्टर	200 ग्राम	200 ग्राम
(7) कारबोक्सी मेथिल सेल्यूलोज	50 ग्राम	———
(8) ऑप्टीकर ब्राइटनर	.25 ग्राम	25 ग्राम
(9) ट्राय सोडियम फास्फेट	500 ग्राम	500 ग्राम
(10) ट्राय सोडियम पॉली फास्फेट	250 ग्राम	100 ग्राम
(11) बोरेक्स	100 ग्राम	100 ग्राम
(12) सोडियम लारेल सल्फेट	25 ग्राम	———
(13) कलर	5 ग्राम	———
(14) सेण्ट	10 ग्राम	———

बनाने की विधि–

(1) कलर, सेण्ट, एसिड स्लॅरी, फोम बुस्टर छोड़कर अन्य सभी सामग्री एक प्लास्टिक डिब्बे में रखकर अच्छी तरह मिला दें।

(2) अब इसमें एसिड स्लॅरी व फोम बुस्टर अच्छी तरह मिलाएं।

(3) सबसे बाद में कलर और सेण्ट मिलाकर पाउडर को बारीक छलनी से छान लीजिए। पाउडर एक से दो बार छानने से फूल जाता है।

(4) तैयार पाउडर प्लास्टिक थैलियों में भर लें। अच्छी गुणवत्ता का डिटर्जेण्ट पाउडर तैयार है।

सावधानियाँ

(1). पाउडर तैयार करने के लिए एल्यूमीनियम के बर्तन उपयोग में मत लाइए।

(2). पाउडर तैयार करते समय हाथ में रबर के मोजे (ग्लब्ज) या प्लास्टिक थैली अवश्य पहन लीजिए।

(10) लिक्विड सोप

(कपड़ा धोने का तरल साबुन)

सामग्री –

(1) पानी	–	10 लीटर
(2) कास्टिक सोडा	–	250 ग्राम
(3) एसिड स्लरी	–	1 लीटर
(4) यूरिया	–	500 ग्राम
(5) टी. एस. पी.	–	200 ग्राम
(6) सोडियम सल्फेट	–	100 ग्राम

बनाने की विधि –

(1) सर्वप्रथम कास्टिक लेई तैयार करें। इसके लिए प्लास्टिक की बाल्टी में 10 लीटर पानी लें, उसमें 250 ग्राम कास्टिक सोडा डालकर लकड़ी के एक गोल डंडे से अच्छी तरह चलाकर घोल लें। घोल बनाने में रासायनिक प्रक्रिया होती है और उसमें तेज गर्मी निकलती है, अतः हाथ से न छुएं। इसे लगभग 10 घण्टे वैसे ही छोड़ दें। इसे कास्टिक लेई कहते हैं।

(2) अब दूसरे दिन या 10 घण्टे बाद इस कास्टिक लेई में एक व्यक्ति एसिड स्लरी को धीरे–धीरे पतली धार के साथ बाल्टी में छोड़ता जाए और दूसरा व्यक्ति घोल को डंडे से बराबर चलाता जाए।

(3) अच्छी तरह मिल जाने पर 500 ग्राम यूरिया को भी इसी में डाल दें। इसके बाद टी. एस. पी. डालकर मिलाए। इसके बाद सोडियम सल्फेट भी मिला दें। इन सभी को मिलाकर कम से कम एक घण्टे तक अच्छे से घुटाई करें। यदि घुटाई ठीक नहीं होगी तो गाढ़ापन नहीं आएगा और यह लिक्विड सोप ठीक से नहीं बन पाएगा।

(4) अब इस घोल को 10–20 घण्टे तक छोड़ दें। उसके बाद उसमें वांछित रंग–सुगंध मिला सकते हैं। पैकिंग के लिए क़ाँच या प्लास्टिक की बोतलों का इस्तेमाल करें।

सावधानियाँ :–

(1) एल्यूमीनियम या अन्य धातु की बाल्टी का प्रयोग किसी भी स्थिति में न करें।

(2) कास्टिक सोडा को खुला न छोड़ें अन्यथा वातावरण से नमी सोखकर पानी बन जाएगा। कास्टिक सोडा अथवा उसके घोल को हाथ से न छुएं।

(11) लिक्विड सोप

(बर्तन धोने का तरल साबुन)

सामग्री –

(1) पानी	–	15 लीटर
(2) कास्टिक सोडा (चिप्स वाला)	–	250 ग्राम
(3) सोडा एस (टाटा का)	–	250 ग्राम
(4) एसिड स्लरी	–	1 लीटर
(5) यूरिया	–	700 ग्राम
(6) सोडियम सल्फेट	–	100 ग्राम

बनाने की विधि –

इसके बनाने की विधि कपड़े धोने वाले लिक्विड सोप जैसी ही है। अंतर सिर्फ इतना है कि कास्टिक सोडा को 10 घण्टे ठण्डा न करके, उसमें तुरंत उपरोक्त सामग्री डालकर आगे की विधि अनुसार घोलें। घुटाई करना इसमें भी उतना ही आवश्यक है। बन जाने के बाद 12 घण्टे के बाद ही उपयोग में लें।

(12) बरतन धोने का पाउडर

सामग्री

(1) डोलामाइट पाउडर	–	10 किलो
(2) बोरेक्स पाउडर	–	500 ग्राम
(3) नींबू सत	–	200 ग्राम
(4) सोडियम लारेल सल्फेट	–	500 ग्राम

बनाने की विधि –

सभी सामग्री एक में अच्छी तरह मिलाकर पैकिंग करें।

(13) शैम्पू

सामग्री –

(1) सोडियम लारेल सल्फेट	–	1 किलो
(2) कलर पक्का (पिगमिंट)	–	5 ग्राम
(3) सुगंध	–	इच्छानुसार

बनाने की विधि

इन सारी चीजों को एक में मिलाकर पैकिंग करें। शैम्पू तैयार है।

(14) हर्बल शैम्पू

सामग्री –

(1) रीठा	–	50 ग्राम
(2) आँवला	–	50 ग्राम
(3) शिकाकाई	–	50 ग्राम
(4) संतरा छिलका	–	50 ग्राम
(5) नागर मोथा	–	50 ग्राम
(6) सोडियम लारेल सल्फेट	–	1 किलो

बनाने की विधि –

(1) 1 से 5 तक की सामग्री को 1 ली० पानी में रात भर के लिए भिगो दें।

(2) सबेरे इसे इतना उबालिए कि मात्रा 250 ग्राम पानी शेष रहे।

(3) अब इसे कपड़छन करके सोडियम लारेल सल्फेट में मिला दें। शैम्पू तैयार है।

(15) कामधेनु दंतमंजन

(काला दंतमंजन)

सामग्री

(1) गाय के गोबर के कंडे के कोयले का बारीक पाउडर	–	1 किलो ग्राम
(2) सादा कपूर (पपड़ी वाला)	–	20 ग्राम
(3) अजवायन का सत	–	20 ग्राम
(4) सादा नमक (बारीक पाउडर)	–	160 ग्राम
(5) सादा पानी	–	160 मि. लीटर

बनाने की विधि

1. कंडे का कोयला बनाना :– गोबर के कंडों को साफ–सुथरी जगह या कढ़ाई में रखकर जलाएं। जब आधे जल जाएं तो किसी साफ बर्तन/नाँद आदि से ढक दें तथा आसपास की हवा बंद करने के लिए टाट या बोरी से किनारों को दबा दें। लगभग आधा–एक घण्टे बाद खोलकर, कोयला निकाल लें। कच्चा कंडा या जली सफेद राख काम में न लेवें। थोड़े दंत मंजन के लिए छोटी कढ़ाई का प्रयोग करना चाहिए। यदि ज्यादा मात्रा बनानी है तो जमीन में गड्ढा खोदकर, ईंट, सीमेंट से प्लास्टर कर भट्टी बनाकर उसे कोयला बनाने के काम लाया जाता है।

2. इस तरह बने कोयले को खरल में बारीक पीसकर, सूती के बारीक कपड़े से रगड़कर छानकर बहुत बारीक पाउडर बना लें।

3. उपरोक्त मात्रानुसार कपूर और अजवायन के सत को एक शीशी में मिलाकर 1 घण्टा रखें। यह अपने आप घुलकर 40 मि. लीटर कपूर का तेल बन जाएगा। कुछ कमी रहे तो अच्छी तरह हिलाकर ठीक कर लें।

4. कपूर के 40 मि. लीटर तेल को उपरोक्त 1 किलो कोयले के पाउडर में डाल दें।

5. फिर सादा नमक पानी में मिलाकर (उपरोक्त मात्रा अनुसार) गरम करके पूरा नमक घोल दें।

6. अब तीनों चीजों (कोयला, कपूर तेल, नमक का घोल) को किसी साफ बर्तन अथवा कढ़ाई में अच्छी तरह हाथों से मलकर मिलाएं। तत्पश्चात् इसे आधा घण्टे तक खरल में रगड़ें और बहुत ही बारीक पाउडर बनाएं।

7. तैयार मंजन पाउडर को शीशियों में पैक करें, इसे सूखने न दें, नमी की स्थिति में ही पैक करें।

(16) हर्बल दंतमंजन

(लाल दंतमंजन)

सामग्री

(1) गेरू	–	500 ग्राम
(2) फिटकरी	–	15 ग्राम
(3) दाल चीनी	–	15 ग्राम
(4) पिपरमेंट	–	10 ग्राम
(5) सेंधा नमक	–	15 ग्राम
(6) काली मिर्च	–	10–15 ग्राम
(7) लौंग	–	10–15 ग्राम
(8) इलायची	–	5 नग
(9) कपूर	–	2 ग्राम (छोटी एक पुड़िया)

बनाने की विधि

(1) फिटकरी को गरम तवे पर रखकर भून लें। भूनने पर यह फूलकर बताशे के समान हो जाती है।

(2) इसके पश्चात् फिटकरी तथा अन्य सभी सामान को अलग–अलग पीसकर मैदा छानने वाली चलनी से छान लें।

(3) छानने के पश्चात् सभी सामान को अच्छी तरह एक साथ मिक्स कर लें तथा इच्छानुसार शीशियों में पैकिंग कर लें।

नोट :– यदि सफेद दंत मंजन बनाना हो तो गेरू के स्थान पर सफेद खड़िया मिट्टी या चाक मिट्टी पाउडर इस्तेमाल किया जा सकता है। अन्य सामान व विधि वैसी ही रहेगी।

(17) दंतमंजन (सफेद)

सामग्री

(1) आरारोट	–	1 किलो
(2)सैक्रीन	–	10 ग्राम
(3) अमृतधारा	–	30 ग्राम

बनाने की विधि

सभी सामाग्री अच्छी तरह एक में बर्तन में मिला लें और डिब्बों में पेक कर दें।

(18) दंतमंजन (काला)

सामग्री

(1) बबूल की लकड़ी का कोयला पाउडर	–	500 ग्राम
(2) चाइना क्ले मिट्टी	–	500 ग्राम
(3) नमक	–	100 ग्राम
(4) फिटकरी	–	100 ग्राम
(5) अमृतधारा	–	30 ग्राम

बनाने की विधि

कपड़छन कोयला पाउडर में शेष सभी चीजें अच्छी तरह मिलाकर डिब्बों में भरें।

(19) टूथपेस्ट

सामग्री

(1) टैरिक एसिड	–	100 ग्राम
(2) कास्टिक सोडा	–	10 ग्राम
(3) सैक्रीन	–	2 ग्राम
(4) बोरेक्स पाउडर (सुहागी)	–	5 ग्राम
(5) चाइना क्ले मिट्टी	–	10 ग्राम
(6) टिटैनियम	–	2 ग्राम
(7) अमृतधारा	–	3 ग्राम

बनाने की विधि

(1) एल्यूमीनियम बर्तन में टैरिक एसिड को गरम करें।

(2) एक अन्य प्लास्टिक बर्तन में 50 ग्राम पानी लेकर उसमें

कास्टिक सोडा मिलाएं।

(3) टैरिक एसिड गरम हो जाए तो नीचे उतार लें तथा उसमें पानी मिश्रित कास्टिक सोडा को धीरे–धीरे मिलाते हुए खूब घोटें।

(4) इसके बाद अन्य सारी चीजें भी अच्छी तरह घोटते हुए मिलाएं। इस तैयार टूथपेस्ट को बोतलों में रख लें अथवा ट्यूब में भरना हो तो भराई की मशीन का इस्तेमाल करें।

(5) पेस्ट और बेहतर दर्जे का बनाना चाहें तो इसमें लौंग का तेल, सुगंध, रंग आदि मिला सकते हैं।

(20) संडास की सफाई का एसिड

(लैट्रिन एसिड)

सामग्री

(1) हाइड्रोक्लोरिक एसिड	–	35 लीटर
(2) जंग खाया लोहा	–	500 ग्राम
(3) पानी	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

सर्वप्रथम जंग खाए लोहे को एसिड में डालकर 4–6 दिन के लिए बंद कर दें। अब जितना हल्का करना हो उतना पानी मिलाकर बोतलों में भर दें।

सावधानियाँ – 1. हाइड्रोक्लोरिक एसिड प्लास्टिक कैन में ही रखें।
2. बोतलों को हमेशा कसकर बंद रखें।

(21) फिनाइल

सामग्री

(1) गंदा विरोजा (रोजिन)	–	18 किलो
(2) कास्टिक सोडा	–	2 किलो

(3) क्रियासोट ऑयल	–	20 लीटर
(4) पानी	–	112 लीटर

बनाने की विधि

सर्वप्रथम रोजिन को लोहे के बरतन में गरम करें तथा गरम हो जाने के बाद आग बुझा दें। अब 12 ली0 पानी में कास्टिक सोडा अच्छी तरह मिलाने के बाद इसमें रोजिन मिलाते हुए खूब घोंटिए। एकसार पेस्ट तैयार हो जाए तो इसमें क्रियासोट ऑयल मिलाकर बाद में 100 ली0 पानी मिलाइए। बोतल, डिब्बे आदि में इस तैयार फिनाइल को भरकर सुरक्षित करें।

(22) नील (पावडर)

सामग्री

(1) सोडियम लारेल सल्फेट	–	1 किलो
(2) ब्लू कलर (पिगमिंट पक्का कलर)	–	100 ग्राम
(3) बोरेक्स पाउडर	–	100 ग्राम

बनाने की विधि

सबको अच्छी तरह मिला लें , नील तैयार है।

(23) नील (लिक्विड)

सामग्री

(1) ब्लू पाउडर (एसिड वायलेट)	–	25 ग्राम
(2) पानी	–	1 लीटर

बनाने की विधि

दोनों सामग्री किसी बाल्टी में अच्छी तरह मिला लीजिए, नील तैयार हो जाएगा।

(24) विशेष सुगन्धित अगरबत्ती

सामग्री

(1) लकड़ी का कोयला पाउडर	–	2 किलो ग्राम
(2) मैदा लकड़ी पाउडर	–	1 किलो ग्राम
(3) लकड़ी का बुरादा	–	500 ग्राम
(4) बाँस की सींक	–	1.5 कि. ग्राम
(5) हीना पाउडर या कोयला पाउडर (रोलिंग हेतु)	–	1.5 कि. ग्राम
(6) रोलिंग पेपर		

सेण्ट की सामग्री

(1) डी. ई. पी. ऑयल	–	5 किलो ग्राम
(2) सेंट	–	500 ग्राम
(3) फैन्सी बकेट सेंट	–	25 ग्राम
(4) प्लेन अगरबत्ती सूखी	–	जितनी लगें (लगभग 6 कि. ग्रा.)
(5) जिलेटिन पेपर (पैकिंग के लिए)		

बनाने की विधि

ऊपर के तीनों (क्र. – 1 से 3) सुखे पाउडर को अच्छी तरह मिलाकर डिब्बे में भरकर रखें। अब जितनी अगरबत्ती बनानी हो उतना ही मसाला (मिश्रण पाउडर) लेकर ठण्डे पानी से रोटी के आटे की तरह गूँथें। गूँथने के बाद गीला मसाला को उसी बर्तन में 15–20 बार ऊपर से पटकें। मसाला तैयार हो जाने के बाद अगरबत्ती बनाने के लिए पटरे के बीच में थोड़ा रोलिंग पाउडर रखें। बाँस की सींक में थोड़ा गीला मसाला लपेटकर और हाथ में रोलिंग का पाउडर लगाकर हाथ व पटरे की सहायता से अगरबत्ती पर गोलाई में लपेटें अर्थात् हथेली की सहायता से पटरे पर सावधानी से हल्के – हल्के बेलें, ताकि सींक पर मसाला गोलाई में समान रूप से चिपट जाय।

अगरबत्ती बनाने के बाद उसे छाया में ही सुखाएं। अच्छी तरह सूख जाने के बाद सेंट में डुबोएं।

सेंट में डुबोने की विधि

सेंट को डी. ई. पी. ऑयल में मिलाकर, गहरे डिब्बे में रख दें। सूखी प्लेन अगरबत्ती का सींक वाला भाग मुट्ठी में पकड़कर सेंट में डुबोएं। सेंट में डुबोने के

तुरंत बाद बाहर निकालकर किसी चौड़े बर्तन या चौड़ी परात में अगरबत्ती खड़ी कर दें। सेंट पूरा खत्म हो जाने के बाद बंद डिब्बे में प्लास्टिक या जिलेटिन पेपर से ढँककर रख दें। दूसरे दिन 20–25 ग्राम तौल के अनुसार जिलेटिन पेपर में पैकिंग करें।

अगरबत्ती बनाने में सावधानियाँ

(1) अगरबत्ती बनाते समय रोलिंग का पाउडर कम मात्रा में लें।
(2) अगरबत्ती बनाने के बाद छाया में ही सुखाएं।
(3) पैकिंग क्रने से पहले 15–20 मिनट धूप में सुखा लें।
(4) सेंटेड अगरबत्ती को धूप में नहीं सुखाया जाता है।

(25) शाकल्य अगरबत्ती

(हवन सामग्री की अगरबत्ती)

सामग्री

(1) हवन सामग्री पाउडर	–	1 कि. ग्रा.
(2) मैदा लकड़ी (पाउडर)	–	1 कि. ग्रा.
(3) लकड़ी कोयला	–	400 ग्राम
(4) हीना गाद	–	100 ग्राम
(5) मस्क अम्ब्रेड	–	5 ग्राम
(6) अम्बर सालिड	–	5 ग्राम
(7) वेनेलिन	–	5 ग्राम
(8) रोज क्रिस्टल	–	5 ग्राम
(9) सींक	–	1 कि. ग्रा.
(10) हवन सामग्री पाउडर	–	1 कि. ग्रा. रोलिंग के लिए
(11) बटर पेपर	–	पैकिंग के लिए

बनाने की विधि

ऊपर के तीनों (क्र. 1 से 3) सूखे पाउडर में हीनागाद, मस्क अम्ब्रेड, अम्बर सालिड, वेनेलिन और रोज क्रिस्टल को महीन पीसकर अच्छी तरह मिलाकर डिब्बे में भरकर बंद करके रख दें। जब जितनी अगरबत्ती बनानी हो, उतना ही मसाला (मिश्रण) लेकर ठण्डे पानी में रोटी के आटे की तरह गूँथें।

मसाला तैयार हो जाने के बाद अगरबत्ती बनाने व बेलने की विधि सेंटेंड अगरबत्ती की विधि अनुसार ही है।

यदि सुगंधित मसाला (उपरोक्त क्रमांक 4 से 8 तक) न मिले तो नागरमोथा 50 ग्राम, कपूर कचरी 5 ग्राम एवं खस 5 ग्राम लें तथा इन सबको पीसकर मसाले में मिला सकते हैं।

(26) चन्दन अगरबत्ती

सामग्री

(1) चंदन पाउडर	–	1 किलो ग्राम
(2) मैदा लकड़ी पाउडर	–	1 कि. ग्रा.
(3) कोयला पाउडर	–	400 ग्राम
(4) बाँस की सींक	–	1 कि. ग्रा.
(5) चंदन पाउडर	–	1 कि. ग्रा.
(6) बटर पेपर	–	पैकिंग हेतु

बनाने की विधि

चंदन अगरबत्ती बनाने की विधि हवन सामग्री की अगरबत्ती जैसी ही है।

(27) गुग्गुल अगरबत्ती

सामग्री

(1) लकड़ी का कोयला पाउडर	–	1 कि. ग्रा.
(2) मैदा लकड़ी पाउडर	–	1 कि. ग्रा.
(3) लकड़ी का बुरादा	–	500 ग्राम
(4) अम्बर सॉलिड	–	5 ग्राम
(5) मस्क अम्ब्रेड	–	5 ग्राम या लोबान–250 ग्रा.
(6) वेनेलिन	–	5 ग्राम
(7) गुग्गुल	–	1 कि. ग्रा.
(8) हीनागाद	–	100 ग्राम
(9) लाल चंदन पाउडर	–	1 कि. ग्रा. रोलिंग हेतु
(10) बाँस की सींक	–	1.5 कि. ग्रा.
(11) बटर पेपर	–	पैकिंग के लिए

(28) साधारण अगरबत्ती

सामग्री

(1) मैंदा लकड़ी	–	1 किलो
(2) कोयला पाउडर	–	100 ग्राम
(3) बाँस की तीलियाँ	–	आवश्यकताभर
(4) सुगन्धि	–	आवश्यकताभर
(5) वाइटेल (स्पिंडल आइल)	–	आवश्यकताभर

बनाने की विधि

मैंदा लकड़ी में कोयला पाउडर (कपड़छन) मिलाकर आटे की तरह लेईनुमा माँड़िए। इस लेई को लकड़ी के पाटे पर फैलाकर इस पर बाँस की तीलियों को रगड़ें, ताकि तीलियों में लेई चिपक जाए। ऊपर से अतिरिक्त कोयला पाउडर लगाते जाएं। सूखने के बाद वाइटेल में सुगंध मिलाकर तीलियों पर छिड़ककर 24 घण्टे के लिए एअरटाइट बंद रखें, फिर पैकिंग कर दें।

सूचना– सादी अगरबत्ती बाजार में तैयार बनी बनाई भी मिलती है। चाहें तो इसे लेकर वाइटल और सुगंध मिलाकर पैकिंग कर सकते हैं।

(29) गीली अगरबत्ती

सामग्री

(1) मैंदा लकड़ी	–	1 किलो
(2) चन्दन पाउडर	–	आवश्यकतानुसार
(3) गुड़	–	आवश्यकतानुसार
(4) शहद	–	आवश्यकतानुसार
(5) सुगंध	–	आवश्यकतानुसार

(2) चन्द्रस	–	100 ग्राम
(3) चपड़ा लाख	–	100 ग्राम
(4) कलर	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

चपड़ा लाख व चन्द्रस एन्सीथिनर में घोलकर कलर मिला दें। नेल पालिश तैयार है।

(35) गीला कुंकुम (गंध कुंकुम)

सामग्री

(1) सी.एम.सी.	–	100 ग्राम
(2) पानी	–	200 ग्राम
(3) कलर	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

पानी में सी.एम.सी. मिलाकर अच्छी तरह घोंटिए। एकरस होने के बाद कलर डालिए।

(36) चाय मसाला

सामग्री

(1) सोंठ	–	100 ग्राम
(2) लौंग	–	5 ग्राम
(3) काली मिर्च	–	50 ग्राम
(4) इलायची	–	5 ग्राम
(5) कलमी	–	5 ग्राम

बनाने की विधि

इन सबको कूटकर चाय में मिलाएं, चाय स्वादिष्ट बनेगी।

(37) विक्स

सामग्री

(1) पैट्रोलियम जैली (बिना चिपचिपाहट की)	–	200 ग्राम
(2) अमृतधारा	–	30 ग्राम

बनाने की विधि

दोनों चीजें एक में अच्छी तरह मिला दें। विक्स तैयार है। इसी तरह कमर दर्द आदि में प्रयोग किए जाने वाले 'मूव' आदी बनते हैं।

(38) बाम

सामग्री

(1) पीला पैट्रोलियम जैली	–	200 ग्राम
(2) अमोनिया	–	5 ग्राम
(3) लौंग तेल	–	5 ग्राम

बनाने की विधि

सभी चीजें एक में मिला लें, बाम तैयार हो जाएगा।

(39) कफ सीरप

सामग्री

(1) शक्कर	–	1 किलो

(2) पानी	–	3 लीटर
(3) खाने का कलर लाल	–	आवश्यकतानुसार
(4) अमृतधारा	–	30 ग्राम
(5) ग्लिसरीन	–	5 ग्राम

बनाने की विधि

शक्कर और पानी गरम करके बगैर तार की चाशनी बनाएं तथा ठण्डा हाने के बाद अन्य चीजें मिला दें।

(40) सर्दी, कफ, खाँसी के लिए स्पेशल काढ़ा (सीरप)

सामग्री

(1) सोंठ	–	10 ग्राम
(2) कलमी	–	10 ग्राम
(3) लौंग	–	2 ग्राम
(4) जायफल	–	एक टुकड़ा
(5) काली मिर्च	–	10 ग्राम
(6) इलायची	–	2 ग्राम
(7) तुलसी पत्ता	–	10 ग्राम

बनाने की विधि

सबका बारीक चूर्ण बनाकर 500 ग्राम पानी में एक घण्टे तक भिगोकर रखें। बाद में सिगड़ी पर उबालिए। जब मात्र 200 ग्राम पानी शेष रह जाए तो इसे कपड़छन कर लें। ठण्डा होने पर इस काढ़े में 10 ग्राम अमृतधारा मिलाकर शीशी में भर लें।

इसे दो चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार लेना चाहिए।

(41) वातनाशक तेल

सामग्री

(1) खोपरा तेल	(ग्रीष्म ऋतु में)	–	200 ग्राम
अथवा सरसों का तेल	(शीत ऋतु में)	–	200 ग्राम
(2) अमृतधारा		–	30 ग्राम

बनाने की विधि

दोनों को एक में मिलाकर 24 घण्टे के लिए बोतल में बंद करके रखें। गुणकारी वातनाशक तेल तैयार है। इस तेल की मालिश सोते समय करनी चाहिए तथा मालिश के बाद कंबल ओढ़कर सोना चाहिए।

(42) बिवाई मलहम

सामग्री

(1) आमसुल तेल	–	100 ग्राम
(2) खोपरा तेल	–	100 ग्राम
(3) तेल का पीला कलर	–	1 ग्राम

बनाने की विधि

आमसुल तेल को गरम करके इसमें खोपरा तेल व कलर मिलाकर ठण्डा होने दीजिए। ठण्डा होने के बाद डिबियों में पैकिंग करिए।

(43)– स्याही

सामग्री

(1) स्याही कलर	–	6 ग्राम
(2) पानी	–	750 ग्राम

(3) हाइड्रोक्लोरिक एसिड — 3 ग्राम
(4) सी.एम.सी. — 3 ग्राम

बनाने की विधि

इन सारी चीजों को मिलाकर बोतलों में पैक करें।

नोट— साहेन्द्री केमिकल्स, पूना का कलर इस्तेमाल करें।

(44) स्टाम्प पैड की स्याही

सामग्री

(1) जामली कलर — 10 ग्राम
(2) पानी — 500 मि.ली.
(3) ग्लिसरीन — 25 ग्राम

बनाने की विधि

सबको मिलाकर बोतलबंद कर लें।

(45) चॉकलेट

सामग्री

(1) दूध का खोवा — 1 किलो
(2) शक्कर — 1 किलो
(3) कॉफी पाउडर — आवश्यकतानुसार
(4) देशी घी — आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

दूध के खोवे में शक्कर मिलाकर पेड़े सरीखा घोंटें। बाद में कॉफी पाउडर मिलाकर एकरस करके साँचे में ढालें। इसके बाद देशी घी गरम करके इसमें चॉकलेट डुबोकर तुरंत निकाल लें और रैपरबंद करें।

(46) पिपरमिंट गोलियाँ

सामग्री

(1) ग्लूकोज — 1 किलो
(2) शक्कर — 1 किलो
(3) खाने का कलर — आवश्यकतानुसार
(4) ग्लिसरीन — 2 ग्राम

बनाने की विधि

(1) ग्लूकोज को गरम करके शक्कर मिलाकर एकरस करें।

(2) इसके बाद कलर और ग्लिसरीन मिला दें तथा साँचे में ढाल दें।

नोट— गोलियाँ बनाने के बाद इन्हें संजीरा पाउडर में घुमा लें।

(47) पुदीन गोलियाँ

सामग्री

(1) ग्लूकोज — 1 किलो
(2) शक्कर — 1 किलो
(3) आरारोट — 250 ग्राम
(4) अमृतधारा — 10 ग्राम

बनाने की विधि

(1) ग्लूकोज गरम करके शक्कर मिलाएं।

(2) तत्पश्चात् आरारोट मिलाकर अमृतधारा मिला दें तथ साँचे में ढालें।

(48) पेट्रोलियम जैली

सामग्री

(1) टेलो (चर्बी)	–	1 किलो
(2) सोयाबीन तेल	–	1 किलो
(3) कास्टिक सोडा	–	200 ग्राम
(4) स्पिंडल ऑइल	–	5 किलो

बनाने की विधि

टेलो तथा सोयाबीन तेल मिलाकर गुनगुना गरम करें। 1 ली0 पानी में कास्टिक सोडा डालें। गुनगुने तेल में इसे मिलाकर खूब घोंटते जाइए। एकरस होने के बाद इसे 12 घण्टे के लिए ठण्डा होने दें। बाद में इसमें स्पिंडल ऑइल मिलाकर पुनः एकरस करिए। जैली तैयार है।

(49) बगैर चिकनाहट की सफेद पेट्रोलियम जैली

सामग्री

(1) सफेद पैराफिन मोम	–	1 किलो
(2) खोपरा तेल	–	1 किलो
(3) व्हाइट ऑयल	–	5 किलो

बनाने की विधि

(1) मोम को गरम करिए और उसमें खोपरा तेल मिला दीजिए।

(2) एक घण्टे बाद व्हाइट ऑइल मिलाकर अच्छी तरह घोटिए। जैली तैयार होगी।

(50) कैस्टर ऑयल साफ करने की विधि

सामग्री

(1) कैस्टर ऑयल	–	1 किलो
(2) कास्टिक सोडा	–	10 ग्राम
(3) पानी	–	20 ग्राम

बनाने की विधि

पानी और कास्टिक सोडा एक में मिलाइए। लेई तैयार होने के बाद इसे कैस्टर ऑयल में 1–1 बूँद मिलाते जाइए और हिलाते रहिए। इसे रात भर के लिए स्थिर छोड़ दीजिए। सबेरे ऊपर का निथरा तेल निकाल लीजिए। यह काँच जैसा सफेद तेल होगा।

(51) खोपरा तेल (पैराशूट आदि)

सामग्री

(1) खोपरा तेल	–	1 किलो
(2) आल्डे सी– 18 नं.	–	1 बूँद
(3) आल्डे सी– 16 नं.	–	1 बूँद

बनाने की विधि

सभी चीजें एक में मिला लीजिए, खोपरा तेल तैयार हो जाएगा।

(52) मोटर ग्रीस (बाल बियरिंग ग्रीस)

सामग्री

(1) ग्रेफाइट पाउडर (कपड़छन)	–	10 किलो
(2) टेलो (चर्बी)	–	10 किलो

(3) पाम तेल	–	8 किलो
(4) कस्टिक सोडा	–	2 किलो
(5) स्पिंडल ऑयल	–	40 किलो
(6) पानी	–	10 लीटर

बनाने की विधि

टेलो व पाम तेल को गुनगुना गरम करें। कास्टिक सोडा पानी में मिलाएं। अब इसे गुनगुने तेल में धीरे--धीरे मिलाते हुए खूब घोंटें। ठण्डा होने के बाद इसमें स्पिंडल ऑयल मिलाते हुए खूब घोंटे। तत्पश्चात् ग्रेफाइट डालते हुए घोटते जाएं। 24 घण्टे बाद बढ़िया चिकना ग्रीस तैयार हो जाएगा।

(53) येलोकब ग्रीस

सामग्री

(1) टेलो	–	10 किलो
(2) पाम तेल	–	8 किलो
(3) चूना पाउडर	–	10 किलो
(4) स्पिंडल ऑयल	–	40 किलो
(5) पानी	–	10 लीटर

बनाने की विधि

चूने को कपड़छन करके पानी में मिलाकर चूने का पानी तैयार करिए। अब तेल व टेलो को गुनगुना गरम करके इसमें चूने का पानी मिला दीजिए। ठण्डा होने के बाद स्पिंडल ऑयल मिलाइए।

(54) फर्नीचर पॉलिश (1)

सामग्री

(1) स्प्रिट	–	1 लीटर
(2) चपड़ा लाख	–	100 ग्राम
(3) चन्द्रस	–	100 ग्राम

बनाने की विधि

स्प्रिट में चपड़ा लाख और चन्द्रस मिलाकर घोंटिए, दूसरे दिन पॉलिश कीजिए।

(55) फर्नीचर पॉलिश (2)

सामग्री

(1) मेथीनाल एल्कोहल	–	750 मि.ली.
(2) एन्सीथिनर	–	250 मि.ली.
(3) चपड़ा लाख	–	100 ग्राम
(4) चन्द्रस	–	100 ग्राम

बनाने की विधि

सबको मिलाकर घोटें, पॉलिश तैयार हो जाएगी।

(56) एम्बोसिंग कलर

सामग्री

(1) एन्सीथिनर	–	1 लीटर
(2) चन्द्रस	–	200 ग्राम
(3) चपड़ा लाख	–	200 ग्राम
(4) पक्का (पिगमिंट) कलर	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

(1) एन्सीथिनर में अन्य दोनों सामग्री मिलाकर घोंटें।

(2) बाद में पक्का पिगमिंट कलर मिलाएं।

(57) ऑयल बांड डिस्टेम्पर

सामग्री

(1) व्हाइटिंग पाउडर	–	40 किलो
(2) डोलामाइट	–	4 किलो
(3) बारीक गोंद	–	1 किलो
(4) डिस्टेम्पर का लिक्विड पिगमिंट कलर	–	200 ग्राम
(5) पाइन ऑयल	–	50 ग्राम

बनाने की विधि

1 से 4 तक की सभी चीजें ग्राइण्डर में पीसकर पाइन ऑयल मिला दीजिए, ऑयल बांड डिस्टेम्पर तैयार हो जाएगा।

(58) ऑयल पेण्ट

सामग्री

(1) रेजिन	–	50 किलो
(2) टिटैनियम डाई ऑक्साइड	–	1 किलो
(3) पिगमिंट कलर	–	1 किलो

बनाने की विधि

उक्त सभी सामग्री मशीन में घुमाएं। पेंट तैयार होगा।

(59) रेड ऑक्साइड प्राइमर

सामग्री

(1) रेजिन	–	50 किलो
(2) रेड ऑक्साइड पाउडर	–	10 किलो

बनाने की विधि

दोनों चीजें मशीन में 12 घण्टे घुमाइए, प्राइमर तैयार होगा।

(60) लकड़ी का प्राइमर (पिंक प्राइमर)

सामग्री

(1) रेजिन	–	50 किलो
(2) डोलामाइट डस्ट	–	10 किलो
(3) पिंक कलर पिगमेंट	–	1 किलो

बनाने की विधि

सभी चीजें एक में मिलाकर अच्छी तरह घोंटें, लकड़ी का प्राइमर तैयार होगा।

(61) सीमेण्ट प्राइमर

सामग्री

(1) रेजिन	–	50 ग्राम
(2) डोलामाइट डस्ट	–	10 किलो
(3) टिटैनियम डाई–ऑक्साइड	–	1 किलो

बनाने की विधि

सभी चीजें मिलाकर मशीन में 12 घण्टे घुमाएं, सीमेण्ट प्राइमर तैयार होगा।

(62) सीमेण्ट वाटर प्राइमर

सामग्री

(1) सोप सोल्यूशन	–	50 किलो
(2) डोलामाइट इस्ट	–	10 किलो
(3) टिटैनियम डाई–ऑक्साइड	–	1 किलो

बनाने की विधि

सारी चीजें मिलाकर मशीन में 12 घण्टे घुमाएं, सीमेण्ट वाटर प्राइमर तैयार होगा।

(63) चूने का छल्ला

सामग्री

1– चूना	–	10 किलो
2– डोलामाइट पाउडर	–	1 किलो
3– शंखजीरा पाउडर	–	1 किलो

बनाने की विधि

(1) जमीन में गड्ढा करके उसमें बोरी बिछाइए तथा इसमें ड्रम में पहले से भिगोया हुआ चूना बिछाइए। इसे रात भर वैसे ही रहने दीजिए।

(2) दूसरे दिन गड्ढे में से चूना निकाल लीजिए।

(3) इसे धूप में ले जाकर इसमें डोलामाइट पाउडर और शंखजीरा पाउडर मिलाइए। यह मकान बनाते समय रेती के ऊपर छपाई के बाद घोटाई के काम आता है। यह बना बनाया बाजार में भी मिलता है।

(64) पान मसाला

सामग्री

(1) सुपारी पाउडर	–	1 किलो
(2) सौंफ पाउडर	–	250 ग्राम
(3) जेस्ट बन	–	100 ग्राम
(4)किस खोपरा	–	100 ग्राम
(5) सैक्रीन	–	आवश्यकतानुसार
(6) खाने का पीला कलर	–	आवश्यकतानुसार
(7) अमृतधारा	–	5 ग्राम

बनाने की विधि

उक्त सभी सामग्री अच्छी तरह एक में मिला दें, उत्तम पान–मसाला तैयार है।

(65) पान–चटनी

सामग्री

(1) ग्लिसरीन	–	1 किलो
(2) अमृतधारा	–	5 ग्राम
(3) खाने का पीला कलर	–	आवश्यकतानुसार
(4) गुलाब सेण्ट	–	आवश्यकतानुसार
(5) चाँदी का वर्क	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

सभी चीजें एक में मिलाएं, चटनी तैयार हो जाएगी।

(66) सौंफ नमकीन

सामग्री

(1) मोटी हरी सौंफ	–	1 किलो
(2) नमक	–	10 ग्राम
(3) हल्दी	–	10 ग्राम

बनाने की विधि

हल्दी और नमक पानी में घोलिए। इसके बाद सौंफ में यह पानी डालकर अच्छी तरह मलिए। 12 घण्टे भिगोने के बाद इसे भून लीजिए, स्वादिष्ट सौंफ तैयार है।

(67) गुलकंद

सामग्री

(1) गुलाब पंखुड़ी	–	1 किलो
(2) शक्कर	–	1 किलो
(3) ग्लिसरीन	–	5 बूँद

बनाने की विधि

गुलाब फूल की पंखुड़ियों में शक्कर मिलाकर तथा ग्लिसरीन डालकर इसे एक भगोने में रखकर उसके मुंह पर कपड़ा बाँध दें। भगोने को 8 दिन धूप में रखें, गुलकंद तैयार हो जाएगा।

नोट– अगर पंखुड़ियाँ सूखी हुई हों तो पानी छिड़ककर गीला कर लें।

(68) बूट पॉलिश

सामग्री

(1) पैराफिन वैक्स	–	1 किलो
(2) खोपरा तेल	–	250 ग्राम
(3) स्पिडल ऑयल	–	2 किलो
(4) बूट पॉलिश काला या मनचाहा कलर	–	250 ग्राम

बनाने की विधि

पैराफिन वैक्स को गरम करके आग से उतार लें तथा इसमें शेष सामग्री मिलाकर घोंटिए। ठण्डा होने पर डिब्बों में भर लें।

(69) बूट पॉलिश लिक्विड

सामग्री

(1) एन्सीथिनर	–	1 किलो
(2) चन्द्रस	–	100 ग्राम
(3) चपड़ा लाख	–	100 ग्राम
(4) कलर मनचाहा	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

एन्सीथिनर, चपड़ा लाख तथा चन्द्रस को मिलाकर कलर मिला लें तथा डिब्बों में पैक करें।

(70) स्लॅरी

सामग्री

(1) डोडेसिल बेंजीन	–	1 लीटर

(2) सल्फ्यूरिक एसिड SO2	–	100 मि.ली.
(3)सल्फ्यूरिक एसिड SO2	–	5 मि.ली.

बनाने की विधि

डोडेसिल बेंजीन में सल्फ्यूरिक एसिड SO2 मिलाकर अच्छी तरह घोंटें। अच्छे ढंग से सोपीकरण होने के बाद सल्फ्यूरिक एसिड SO2 मिलाइए। इसके बाद इसे फ्रिज में रख दें तो स्लॅरी गाढ़ी तैयार होगी।

नोट– स्लॅरी की फ्रिज अलग तरह की आती है। घर के फ्रिज में न रखें, अन्यथा फ्रिज खराब हो सकता है।

(71) लेबल चिपकाने की चिक्की

सामग्री

(1) आरारोट	–	1 किलो
(2) नीला थोथा	–	आवश्यकतानुसार
(3) पानी	–	2 लीटर

बनाने की विधि

आरारोट में पानी मिलाकर उबालिए। एकदम गाढ़ा पेस्ट तैयार होने के बाद नीला थोथा का पाउडर बनाकर उसमें मिलाकर घोंटिए।

(72) गोंद बोतल

सामग्री

(1) बबूल का गोंद	– 1 किलो
(2) हाइड्रोक्लोरिक एसिड	– 10 ग्राम

बनाने की विधि

गोंद को पानी में अच्छी तरह भिगोइए। एकरस होने के बाद एसिड मिलाकर बोतल में भरें।

(73) सफेद गोंद

सामग्री

(1) ग्लूकोज	–	1 किलो
(2) बबूल गोंद	–	1 किलो
(3) हाइड्रोक्लोरिक एसिड	–	10 ग्राम

बनाने की विधि

गोंद को पानी में भिगोकर एकरस कीजिए। अब इसमें ग्लूकोज और एसिड मिलाकर पैकिंग कर लें।

(74) वाटर प्रूफिंग सीमेण्ट

सामग्री

(1) चूना पाउडर	– 1 किलो
(2) डोलामाइट	– 1 किलो
(3) शंखजीरा	– 1 किलो

बनाने की विधि

इन सबको अच्छी तरह मिला देने से वाटर प्रूफिंग सीमेण्ट तैयार होती है।

(75) वाटर प्रूफ लिक्विड

सामग्री

(1) स्लॅरी	–	1 लीटर
(2) कास्टिक सोडा	–	200 ग्राम
(3) यूरिया	–	200 ग्राम
(4) पानी	–	5 लीटर
(5) कलर	–	आवश्यकतानुसार
(6) सेण्ट	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

सर्वप्रथम पानी में कास्टिक सोडा और यूरिया मिलाएं। यह पानी स्लरी में धीरे–धीरे छोड़िए और सेण्ट व कलर दीजिए; वाटर प्रूफ लिक्विड तैयार है।

(76) उदरशोधन चूर्ण

सामग्री

(1) बाल हरड़ (छोटी हरड़)	–	200 ग्राम
(2) आँवला कंठी	–	200 ग्राम
(3) सोनामुखी	–	200 ग्राम
(4) इन्द्र जौ	–	200 ग्राम
(5) काला नमक	–	100 ग्राम
(6) बड़ी हरड़	–	100 ग्राम
(7) एरण्ड तेल	–	आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि

बाल हरड़ को एरण्ड तेल में तलकर महीन चूर्ण बना लें। इसके बाद अन्य सभी चीजों का कपड़छन चूर्ण तैयार करके बाल हरड़ चूर्ण में मिलाकर

रख लें।

इसे एक चम्मच की मात्रा में सोते समय गुनगुने पानी के साथ लेना चाहिए। हफ्ते में एक बार लेते रहने से पेट साफ रहता है। इससे बुखार आदि उपद्रव भी नहीं होने पाते।

(77) पोटीन (पुट्ठी–1)

लकड़ी आदि का छेद भरने को

सामग्री

(1) चाइना क्ले मिट्टी	–	1 किलो
(2) सोयाबीन का तेल	–	1 किलो

बनाने की विधि

दोनों एक साथ अच्छी तरह पीसने से पोटीन तैयार होती है।

(78) पोटीन (पुट्ठी– 2)

सामग्री

(1) चाइना क्ले मिट्टी	–	1 किलो
(2) रेजिन	–	250 ग्राम
(3) ग्रे कलर	–	50 ग्राम

बनाने की विधि

सबको एक साथ पीसें, पोटीन तैयार हो जाएगी।

(79) लिक्विड कोलतार

सामग्री

(1) रोडटार (तारकोल)	–	100 किलो
(2) केरोसिन	–	100 किलो
(3) चूना पाउडर	–	5 किलो

बनाने की विधि

तारकोल गरम करें, जब पतला हो जाए तो भट्टी बुझा दें। केरोसीन में चूना मिलाकर तारकोल में मिला दें।

इसे लगाने से लकड़ी, टीन आदि सुरक्षित रहते हैं, सड़ते नहीं हैं।

(80) पेण्ट में डालने का टर्पेण्टाइन

सामग्री

(1) व्हाइट केरोसीन	–	200 लीटर
(2) पाइन ऑइल	–	5 लीटर

बनाने की विधि

दोनों को मिलाकर 24 घण्टे के लिए एअरटाइट बंद रख दें। इसके बाद पैकिंग करें।

(81) बेकरी उत्पाद डबलरोटी(ब्रेड)

सामग्री

(1) मैदा	–	1 किलो
(2) ईस्ट	–	8 से 10 ग्राम (गर्मी में) 10 से 15 ग्राम (सर्दी में)

(3) चीनी	–	30 ग्राम
(4) नमक	–	20 ग्राम
(5) घी	–	20 ग्राम
(6) पानी	–	600 मि. लीटर

बनाने की विधि

(1) एक बर्तन में एक कप साधारण गरम पानी लेकर उसमें 15 ग्राम पिसी चीनी घोलें। इसमें ईस्ट डालकर 10 मिनट तक ढँककर रख दें।

(2) दूसरे बर्तन में बचे हुए पानी में 20 ग्राम नमक एवं 15 ग्राम चीनी डालकर शर्बत जैसी घोल तैयार करें।

(3) जब ईस्ट, साबुन या दही के झाग समान फूलकर ऊपर आ जाए तब उसमें 50 से 100 ग्राम मैदा डालकर, किसी चीज से अच्छी तरह चलाकर पतला घोल तैयार करें तथा पुनः 10 से 15 मिनट तक ढँककर रख दें।

(4) अब मैदा में ईस्ट वाला घोल, नमक व चीनी का घोल तथा घी डालकर अच्छी तरह गूँथ लें। मैदे को गूँथने में रोटी के आटे से थोड़ा मुलायम रखें। तैयार मैदे को 2 से 2.5 घण्टे तक खमीर उठने (फूलने) के लिए ढँककर रख दें।

(5) इसको हल्का सा मसलकर उसमें से 400 ग्राम वजन की मात्रा तौलकर उसकी गोल लोई बनाकर 5 मिनट के लिए रख दें।

(6) इस बीच ब्रेड पकाने वाले साँचे में घी या तेल लगाकर तैयार कर लें ताकि ब्रेड साँचे से चिपके नहीं और आसानी से बाहर निकल सके

(7) 5 मिनट के बाद इस मैदा को मोल्डिंग करके (साँचे की आकृति देने को मोल्डिंग कहते हैं) साँचे में रखें तथा ऊपर से ढक्कन लगाकर साँचे को बंद करें। 2 से 2.5 घण्टे तक साँचे को ऐसे ही रहने दें।

(8) साँचा जब मैदा से अच्छी तरह भर जाए तब उसे 400 डिग्री फेरेनहाइट गर्म भट्टी में 20 मिनट तक पकाकर निकाल लें।

1 किलो मैदा के मिश्रण से 4 ब्रेड तैयार होते हैं। ब्रेड के मैदे में से बंद, बुर्गद व पीजा इत्यादि भी बना सकते है।

(82) केक

सामग्री

(1) मैदा	–	1 किलो
(2) घी	–	600 ग्राम
(3) चीनी	–	1 किलो
(4) मिल्क पाउडर	–	200 ग्राम
(5) कार्न फ्लोर	–	50 से 100 ग्राम
(6) बेकिंग पाउडर	–	10 ग्राम
(7) वेनिला एसेन्स	–	10 ग्राम
(8) दूध या पानी	–	750 मि. लीटर से 1 लीटर तक

बनाने की विधि

(1) एक बर्तन में मैदा को छानकर रखें।

(2) दूसरे बर्तन में घी लेकर (जमा हुआ) अच्छी तरह फेंटें तथा उसमें पिसी चीनी धीरे–धीरे मिलाते जाएं। आवश्यकतानुसार इसमें थोड़ी मात्रा में दूध या पानी डालकर मिश्रण को घोंटकर क्रीम जैसा तैयार करें।

(3) इस मिश्रण में कार्न फ्लोर एवं मिल्क पाउडर डालकर अच्छी तरह फेंटें। अच्छी तरह मिल जाने के बाद बेकिंग पाउडर एवं वेनिला एसेन्स या छोटी इलायची पीसकर डालें। बेकिंग पाउडर डालने के बाद मिश्रण को एक ही दिशा में फेंटें।

(4) अंत में थोड़ा–थोड़ा मैदा एवं थोड़ा–थोड़ा दूध या पानी डालते हुए मिश्रण को हल्के हाथों से उँगलियों की सहायता से मिलाते जाएं। यह ध्यान रखें कि मिश्रण ज्यादा पतला था ज्यादा कड़ा (टाइट) न होने पावे। इस मिश्रण को पकोड़े के घोल की तरह तैयार करें।

(5) केक पकाने वाले साँचे में घी अथवा तेल लगाकर तैयार करें ताकि केक साँचे में चिपके नहीं तथा आसानी से बाहर निकल सके।

(6) तैयार ट्रे में उपरोक्त मिश्रण को 1 इंच या 1.5 इंच की मोटाई में साँचे में चारों तरफ बराबर डालें तथा 300 फारेनहाईट गरम भट्टी में 25 से 30 मिनट तक पकाकर निकाल लें। इसे रैक या जाली में रखें।

(7) केक जब पूरी तरह ठण्डी हो जाय तब उसे ट्रे से बाहर निकालें और यदि आवश्यक हो तो पैक करें।

केक पर आयसिंग (सजावट) :–

यदि केक पर आइसिंग करना चाहते हैं तो निम्न विधि से की जा सकती है:– एक बर्तन में 200 ग्राम मलाई, मक्खन या घी लेकर अच्छी तरह फेंटें। इसमें 50 ग्राम आइसिंग शुगर या 100 ग्राम पिसी चीनी डालकर अच्छी तरह फेंटें। इस मिश्रण में 5 बूँद बेनाना एसेंस या वेनिला एसेंस एवं थोड़ी मात्रा में दूध डालकर अच्छी तरह फेंटकर क्रीम तैयार करें। क्रीम में खाने वाला रंग डाल सकते हैं। अब तैयार क्रीम को केक के ऊपर अपने मनपसंद ढंग से सजाएं।

(83) बिस्कुट (मीठे बिस्कुट)

सामग्री

(1) आटा या मैदा	–	1 किलो
(2) घी	–	400 ग्राम
(3) चीनी	–	500 ग्राम
(4) बेकिंग पाउडर	–	10 ग्राम
(5) अमोनिया बाई कार्ब	–	10 ग्राम
(6) कस्टर्ड पाउडर	–	50 ग्राम
(7) वेनिला एसेंस	–	5 मि. लीटर
(8) नमक	–	5 ग्राम
(9) दूध या पानी	–	250 से 300 मि. लीटर

बनाने की विधि

(1) मैदा या आटा को छानकर रखें।

(2) एक बर्तन में घी लेकर (जमा हुआ) अच्छी तरह फेंटें तथा उसमें पिसी चीनी धीरे–धीरे मिलाते जाएं जब तक कि सारी चीनी मिल जाय।

(3) इस मिश्रण में थोड़ी मात्रा में दूध या पानी मिलाकर मिश्रण को अच्छी तरह फेंटें इसमें क्रमशः कस्टर्ड पाउडर, बेकिंग पाउडर, अमोनिया बाइकार्ब या (मीठा सोडा), नमक, वेनिला एसेंस या छोटी इलायची पीसकर डालें तथा मिश्रण को अच्छी तरह मिला लें।

(4) अंत में मैदा या आटा डालकर आवश्यकतानुसार दूध या पानी से मिश्रण को अच्छी तरह मिलाएँ एवं मसलें। इस मिश्रण को रोटी के आटे से हल्का नरम रखें।

(5) तैयार मिश्रण की बड़ी–बड़ी लोई बनाकर बेलन की सहायता से 1/8" की मोटाई में बेलकर बिस्कुट साँचे से बिस्कुट काटें। कटे हुए बिस्कुटों को घी लगी एल्यूमीनियम ट्रे में एक–एक इंच की दूरी में सजाएं।

(6) ट्रे को 350 डीग्री फारेनहाइट गर्म भट्टी में 10 से 15 मिनट तक पकाकर निकालें। ठण्डा करके बिस्कुटों को आवश्यकतानुसार पैक अथवा संग्रहण करें। 1 किलो मैदे में 750 ग्राम बिस्कुट तैयार हो जाते हैं।

(84) कोकोनेट बिस्कुट

सामग्री

(1) मैदा	–	800 ग्राम
(2) घी	–	300 ग्राम
(3) चीनी	–	500 ग्राम
(4) नारियल बुरादा	–	200 ग्राम
(5) बेकिंग पाउडर	–	10 ग्राम
(6) अमोनिया बाई कार्ब	–	10 ग्राम
(7) नमक	–	5 ग्राम
(8) कोका पाउडर	–	5 ग्राम
(9) दूध पाउडर	–	25 ग्राम
(10) कोकोनट एसेंस	–	5 मि. लीटर
(11) दूध या पानी	–	250 से 300 मि. लीटर

बनाने की विधि

बनाने की विधि मीठे बिस्कुट की तरह ही है।

(85) नमकीन बिस्कुट

सामग्री

(1) मैदा या आटा	–	1 किलो
(2) घी	–	400 ग्राम
(3) चीनी	–	25 ग्रा. से 200 ग्राम (इच्छानुसार)
(4) नमक	–	25 ग्राम
(5) बेकिंग पाउडर	–	10 ग्राम
(6) अमोनिया बाई कार्ब	–	10 ग्राम
(7) अजवायन या जीरा	–	10 ग्राम
(8) दूध या पानी	–	250 ग्राम से 300 ग्राम

बनाने की विधि

उपरोक्तानुसार मीठे बिस्कुट की तरह।

(86) नान खटाई

सामग्री

(1) मैदा	–	600 ग्राम
(2) घी	–	700 ग्राम
(3) बेसन	–	200 ग्राम
(4) सूजी	–	200 ग्राम
(5) चीनी	–	500 ग्राम
(6) जायफल	–	1/2 नग
(7) अमोनिया बाईकार्ब	–	2.5 ग्राम
(8) बेकिंग पाउडर	–	2.5 चम्मच
(9) वेनिला एसेंस	–	1 चम्मच

बनाने की विधि

(1) मैदा को छानकर रखें।

(2) एक बर्तन में घी लेकर अच्छी तरह फेंटें तथा उसमें पिसी चीनी डालकर अच्छी तरह मिलाते जाएं और क्रीम जैसा मिश्रण तैयार करें।

(3) इस क्रीम में क्रमशः बेसन, सूजी डालकर अच्छी तरह मिलाएं। अच्छी तरह मिल जाने के बाद इस मिश्रण में अमोनिया बाईकार्ब, बेकिंग पाउडर, वेनिला एसेन्स एवं जायफल पीसकर डालें तथा अच्छी तरह मसलें।

(4) अंत में मैदा डालकर बिस्कुट के आटे की तरह तैयार करें। तैयार आटे से छोटी–छोटी लोई काटकर सुपारी या आँवले की तरह गोल बनाकर पकाने वाली घी लगी ट्रे (एल्युमीनियम ट्रे) में दो–दो इंच की दूरी में रखें।

(5) ट्रे को 275 डिग्री फेरेनहाइट गरम भट्ठी में रखकर 10 से 15 मिनट तक पकाकर निकालें। ठण्डा होने पर डिब्बे में पैकिंग करें।

(87) मोमबत्ती

सामग्री

(1) पैराफिन वैक्स (मोम) – आवश्यकतानुसार
(2) खाने वाला तेल
(3) हल्का बटा हुआ सूती धागा
(4) रंग (यदि रंगीन बनाना हो)

बनाने की विधि

(1) पैराफिन वैक्स को किसी गहरे बर्तन में पिघलाने के लिए रख दें। इसे वनस्पति घी की तरह पिघलाएं।

(2) मोम पिघलने तक मोमबत्ती साँचे को कर लें। साँचे को पुराने कपड़े की सहायता से अच्छी तरह साफ करके उसमें (कपड़े अथवा रुई से) खाने वाला तेल लगाएं। ताकि मोम साँचे से न चिपके। इसके बाद साँचे में बने चिहनों की सहायता से धागा लपेटें। साँचे के हैण्डिल में धागे को एक सिरे से बाँधकर मोमबत्ती के बने खाँचे के बीच से ले जाते हुए हैण्डिल में बने ग्रुव में ले जाकर लपेटते जाते हैं। अन्त में दूसरे सिरे पर बाँध देते हैं।

इसके बाद पुराने सूती कपड़े को गीला करके समतल जमीन या बैंच पर बिछाएं फिर उसके ऊपर साँचे को रखें। इतना करने तक हमारा मोम पिघल जाएगा।

(3) अब पिघले हुए मोम को चम्मच या कटोरी की सहायता से साँचे में डालें। जो मोम नीचे बह जाता है, उसे सूती कपड़े में पुनः प्रयोग हेतु इकट्ठा कर लें।

(4) साँचे को पानी से भरी बाल्टी में ठण्डा होने के लिए रख दें। मोम को साँच में जमने के लिए कम से कम 10–15 मिनट तक पानी में रखें।

(5) यदि पहली बार मोम डालने पर साँचे में मोम की मात्रा कुछ कम रह गयी हो तो पुनः पिघला मोम साँचे में डालकर ऊपर तक भर लें तथा जमने के लिए फिर पानी में रख दें।

(6) अब साँचे को (जिसमें मोमबत्ती जम चुकी हैं) पानी से निकालकर साँचे के दो तरफ के धागे (बीच से) ब्लेड या कैंची से काटें।

(7) साँचे के ऊपर की तरफ जमे हुए मोम को बीचों–बीच चाकू से काटकर साँचे के दोनों भागों को क्लैम्प खोलकर अलग करें।

(8) बनी हुई मोमबत्तियों को साँचे से बाहर निकालकर, दूसरे सिरों को ब्लेड से काटकर प्लेन कर लें तथा आवश्यकतानुसार पैकिंग करें।

सावधानियाँ

(1) साँचे में धागा कसकर लपेटना चाहिए।
(2) पानी से भरी बाल्टी में साँचे को अधिक से अधिक डुबोएँ, पूरा न डुबोएँ।
(3) मोम को केवल पिघलाया जाता है, उबालना नहीं है।

निर्माण सामग्री के प्राप्ति स्थान

1– निम्न वस्तुओं के लिए किराना की दुकान पर संपर्क करें– आरारोट, सैक्रीन, भीमसेनी कपूर, अजवाइन फूल, ठंडई (मेन तोल), पिपरमिंट, सुहागी (बोरेक्स पाउडर), नमक , गेरू पाउडर, लाल फिटकरी, अकरकरा, सोना सुखी, बाल हरड़, आँवला कठी, काला नमक, हरड़ पाउडर, गुड़, शहद, मैदा लकड़ी पाउडर, चंदन पाउडर, गुग्गुल, नागर मोथा, इमली छिलका, संतरे के छिलके, गंदा बिरोजा, सोयाबीन तेल, तिल्ली तेल, एरण्ड तेल, खोपरा तेल, पाम तेल, गोंद का बारीक पाउडर, कत्था, सुपारी, हरी सौंफ मोटी, हल्दी, सेवरधनी सुपारी, गुलाब पत्ती, शक्कर, बोर्नवीटा, कोको, कॉफी, सोंठ, काली मिर्च, लौंग, जायफल, इलायची, नीला थोथा, बबूल गोंद इत्यादि।

2– स्टेरिक एसिड, टिटैनियम, बोरिक पाउडर, डोडेसिल बेंजीन, सल्फ्यूरिक एसिड, स्लॅरी, कलर, एस एल एस, सोडियम लारेल सल्फेट, रोजिन, कास्टिक सोडा, यूरिया, क्रियासुट ऑइल, ग्रेफाइट, सी एम सी जैसी चीजें अपने शहर की केमिकल की दुकानों से लीजिए अथवा नागपुर में रेशमवाली गली के ठक्कर ब्रदर्स व स्वस्तिक केमिकल्स बुधवारी, दिल्ली के तिलक बाजार तथा बंबई में अमृतलाल भूरा भाई प्रिंस स्ट्रीट से भी संपर्क कर सकते हैं।

घरेलू उघोग सम्बन्धी बुनियादी बातें

नागपुरवासी श्री अनिल प्रसाद पहले तकनीकी क्षेत्र में छोटी सी नौकरी करते थे। नौकरी में उन्हें लगा कि पर्याप्त बचत नहीं हो पा रही है तो उन्होंने फुरसत के समय में कोई और धंधा शुरू करने का विचार बनाया। एक बार डिटर्जेण्ट पाउडर की एक दुकान पर उन्हें मालूम चला कि वहाँ इसे बनाने की सामग्री भी मिलती है तो उनके मन में आया कि क्यों न यही काम किया जाय। और फिर, जरूरी जानकारी हासिल करके अनिल जी ने खाली समय में डिटर्जेण्ट पाउडर बनाकर बेचना शुरू कर दिया।

प्रारम्भिक दिनों में अनिल जी घर–घर जाकर अपना उत्पाद बेचते थे। उधार देना पड़े तो उधार भी देते थे। यहाँ तक कि गुणवत्ता परखने के लिए लोगों के बीच नमूने के पैकेट भी बाँटे। धीरे–धीरे उपभोक्ताओं का विश्वास उनके उत्पादन पर जमने लगा तो बात आगे चल निकली। इसी दौरान ऐक्सीडेण्ट में अनिल जी के एक हाथ की तीन उँगलियाँ कट गईं तो मालिक ने उन्हें अनुपयोगी समझकर नौकरी से निकाल दिया। यह उनके लिए चुनौती भरा समय था। लेकिन इस चुनौती को स्वीकार करते हुए उन्होंने अपने आपको पूरी तरह से ही डिटर्जेण्ट निर्माण के लिए समर्पित कर दिया। आज स्थिति यह है कि इस घरेलू रोजगार की बदौलत अनिल जी अपना तथा अपने परिवार का मजे में भरण–पोषण तो कर ही रहे हैं, साथ ही अब उन्होंने अपने व्यवसाय को विस्तार देकर कुछ और भी चीजों का उत्पादन शुरू कर दिया है।

गुलबर्गा (कर्नाटक) के निवासी श्री सुनील शाबादी की कहानी तो और भी चुनौती भरी है। एक समय था कि वे बेरोजगारी से तंग आकर और परिवार वालों के ताने सुन–सुनकर आत्महत्या कर लेने का मन बना चुके थे। लेकिन संयोगवश उन्हीं दिनों गुलबर्गा में ही आयोजित एक कार्यक्रम में आजादी बचाओ आंदोलन के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव दीक्षित का व्याख्यान उन्हें सुनने को मिला तो जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण ही बदल गया। बाद में आंदोलन के स्थानीय कार्यकर्ताओं से सुनील जी ने संपर्क किया तो कार्यकताओं ने उनकी व्यथा–कथा सुनने के बाद उन्हें डिटर्जेण्ट पाउडर बनाने का फार्मूला उपलब्ध कराया तथा कुछ आर्थिक सहायता देकर छोटे स्तर से घरेलू रोजगार शुरू करने का परामर्श दिया। आज स्थिति यह है कि सुनील शाबादी का कारोबार लाखों में पहुँच चुका है और वे एक साथ दर्जन भर परिवारों का भरण–पोषण करने में सक्षम हैं।

जलाराम पेण्ट्स नागपुर के मालिक हर्षद भाई ठक्कर ने भी शुरू में अपने शुभचिन्तकों से मात्र थोड़े से पैसों की मदद लेकर घूम–घूमकर सेनेटरी ब्रश वगैरह बेचने का काम किया। लेकिन आज अपनी मेहनत, लगन, व्यवहारशीलता और गुणवत्ता के भरोसे वे प्रतिष्ठित उद्यमी बन चुके हैं।

इन तीन उद्यमियों की कहानी पढ़कर पाठकों को संभवतः अनुमान हो गया होगा कि बिजनेस (उद्यम) क्या है और इसके लिए एक व्यक्ति में किन खूबियों की जरूरत है। कहने का सीधा सा अर्थ यह है कि जिस भी तरह का उद्यम शुरू करना हो, उसके विषय में पर्याप्त जानकारी, लगनशीलता, जनसम्पर्क और व्यवहारशीलता हो तो कोई भी व्यक्ति एक सफल उद्यमी बन सकता है।

इस पुस्तक की सबसे खास बात यह है कि इसमें सिर्फ उन्हीं वस्तुओं के फार्मूले दिये गए हैं, जिनके निर्माण में कम पूँजी लगती है, बड़ी मशीनों की जरूरत नहीं होती, बनाने में आसानी रहती है और कोई भी व्यक्ति घरेलू स्तर पर बनाकर अपनी आजीविका चला सकता है।

कोई भी उद्यम शुरू करने के पहले उससे सम्बन्धित कुछ बुनियादी बातें अवश्य जान लेनी चाहिए। जिस वस्तु का उत्पादन करना हो, उसके निर्माण सम्बन्धी पर्याप्त ज्ञान का होना तो जरूरी है ही, साथ ही उत्पाद की खपत समुचित ढंग से हो सके, इसके लिए बाजार का अध्ययन–सर्वेक्षण और उपभोक्ताओं की मानसिकता व उनकी जरूरतों की समझ बनानी भी जरूरी है। यह जानना चाहिए कि लोगों की पसन्द क्या है। मान लीजिए कि डिटर्जेण्ट पाउडर का उत्पादन करना है तो उपभोक्ताओं की मानसिकता की पकड़ होनी चाहिए कि उन्हें कैसा पाउडर पसन्द है, पाउडर का कैसा रंग अच्छा लगता है, कैसी खुशबू लोग पसन्द करते हैं, या कि पाउडर में झाग कितनी होनी चाहिए। अपने उत्पाद का मूल्य आपको अपने उपभोक्ताओं की जेबी हालत और बाजार में पहले से मौजूद अन्य उत्पादकों की नीतियाँ देखते हुए ही तय करती पड़ेंगी। डिटर्जेण्ट पाउडर का उदाहरण लें तो यह समझना जरूरी है इसके उपभोक्ता मुख्यतः निम्न तथा मध्यम श्रेणी के ही लोग होंगे। उच्च तबके के लोग सामान्यतः डिटर्जेण्ट पाउडर का इस्तेमाल बन्द ही कर चुके हैं और वे अब वाशिंग मशीनों का इस्तेमाल ज्यादा करते हैं। ऐसे में निम्न तथा मध्य वर्ग की आवश्यकताओं को ही ध्यान में रखकर चलना होगा।

बिना मशीनों की सहायता लिए हाथ से बनाई जाने वाली चीजों का स्वयं परीक्षण कर पाना मुश्किल होता है, इसलिए ग्राहकों में अपने उत्पाद का नमूना वितरित करके प्रतिक्रिया अवश्य जाननी चाहिए। आज के समय में गुणवत्ता (क्वालिटी नियंत्रण)अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि बाजार में बड़ी–बड़ी कंपनियाँ मौजूद हैं , जिनसे कि हमेशा ही प्रतियोगिता का सामना करना पड़ेगा। किसी

समय उत्पाद की बिक्री आसान थी और उत्पादक का महत्त्व बहुत ज्यादा था, क्योंकि तब उद्योग बहुत कम थे और प्रतियोगिता लगभग न के बराबर थी।

वर्तमान में बड़ी–बड़ी कंपनियों में अपना वर्चस्व बनाने के लिए जिस तरह से विज्ञापनी युद्ध चल रहा है, वह भी छोटे उद्यमियों के लिए एक बड़ी समस्या है। छोटे उद्यमी के पास इतना धन नहीं होता कि वह इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के जरिए विज्ञापनों के ऊपर ही लाखों करोड़ों रुपये खर्च कर सके। ऐसे में वह क्या करे, यह एक सवाल है ? इस विषय में विशेष बात यह है कि सीमित पूँजी वाले उद्यमी को शुरूआत में विज्ञापनों के पीछे बहुत परेशान होने की कत्तई जरूरत नहीं है। बल्कि गुणवत्ता (क्वालिटी), व्यवहारकुशलता, कार्यकुशलता और व्यापक जन सम्पर्क की क्षमता पैदा करना सफल होने के लिए सबसे जरूरी है। अगर किसी व्यक्ति में ये सभी गुण मौजूद हैं तो तमाम मुश्किलों में भी वह स्थापित हो ही जाएगा और ये ही गुण उसके लिए सबसे बड़े विज्ञापन के माध्यम बन जाएंगे। बाद में जब स्थिति मजबूत होने लगे तो और तेजी से बाजार में व्यापक पहुँच बनाने के लिए आकर्षक पैकिंग, विज्ञापन आदि पर ध्यान दिया जा सकता है। इन सबमें गुणवत्ता बनाये रखना और उसे बेहतर करते रहना सबसे जरूरी बात है, क्योंकि अंततः कोई ग्राहक आपके उत्पाद का बार–बार इस्तेमाल तभी करना चाहेगा, जबकि उसे दूसरी अन्य कंपनियों से तुलनात्मक रूप से बेहतर पाएगा।

हालाँकि कभी–कभी कुछ चीजों की मार्केटिंग आसान भी होती है, जैसे कि अगरबत्ती। अगरबत्ती मंदिर के सामने या कहीं भी आसानी से बिक जाती है क्योंकि अधिकांश लोग इसे अपने आराध्य देवी–देवता की पूजा–अर्चना के लिए खरीद ही लेते हैं और गुणवत्ता पर उतना ध्यान नहीं देते। लेकिन यदि साबुन बेचने का सवाल हो तो लोग पहले सैम्पल (नमूना) जरूर आजमाना चाहेंगे। इसके अलावा अगरबत्ती जैसे कुछ क्षेत्रों में काम करना इस नाते भी आसान है क्योंकि इसमें तकनीकी कुशलता की विशेष जरूरत नहीं होती और इसके लिए लेबल, स्टिक आदि बने बनाये बाजार में उपलब्ध हो जाते हैं। लेकिन दूसरे अन्य क्षेत्रों में बिना खास काबिलियत हासिल किये काम नहीं चलता।

आजकल लोग बाजार की जिन वस्तुओं का इस्तेमाल करते हैं उनमें काफी संख्या ऐसे सामानों की है जिनमें तरह–तरह के रासायनिक पदार्थ मिले होते हैं। ऐसे में यदि रसायन मिश्रित वस्तुओं का उत्पादन करना हो या रासायनिक पदार्थों (केमिकल्स) के क्षेत्र में ही काम करना हो तो रसायनों के मिश्रण के तरीके, अनुपात, रखरखाव आदि के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी रखनी चाहिए। इस क्षेत्र में काम करना है तो – दूध में पानी मिलाने और पानी में दूध मिलाने में

फर्क है– यह समझना जरूरी है। ध्यान देने वाली बात यह भी है कि उद्यम शुरू करने के विषय में सिर्फ किताबी ज्ञान या सुन–सुना भर लेने से बहुत काम नहीं बनने वाला। जिस तरह से तैरना सीखने के लिए पानी में उतरना जरूरी है, ठीक उसी तरह उद्यम के क्षेत्र में उतरने के बाद ही नये–नये व्यावहारिक अनुभव मिलते हैं।

अभी तक हमने बहुत कम धन (कुछ सौ या कुछ हजार रुपये) लगाकर छोटे स्तर पर घरेलू उद्योग शुरू करने के बारे में बात की। अब यदि कोई व्यक्ति अपने उत्पाद का ब्रांड नाम देना चाहता है और जमीन, बिजली, पानी व कुछ ज्यादा धन के लिए सरकारी सहायता लेकर थोड़ा बड़े स्तर पर लघु उद्योग स्थापित करना चाहता है तो उसे पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन) की औपचारिकताएं भी पूरी करनी आवश्यक होंगी। इसके लिए सबसे पहले डायरेक्टर आफ इण्डस्ट्रीज या जिला उद्योग अधिकारी से संपर्क करना होगा। आवेदन पत्र उचित पाये जाने पर डायरेक्टर आफ इण्डस्ट्रीज अनापत्ति प्रमाण–पत्र जारी करता है तथा नया उद्योग स्थापित करने के लिए रजिस्ट्रेशन की सिफारिश कर देता है। इसके बाद नगरपालिका से उद्योग लगाने की अनुमति लेनी होती है तथा बिजली, पानी आदि के लिए सम्बन्धित विभागों को आवेदन करना होता है।

जहाँ तक कंपनी बनाने का सवाल है, तो कंपनी का कोई अकेला मालिक बन सकता है या भागीदारी (पार्टनरशिप) में भी इसका गठन किया जा सकता है। इसे फर्म, प्राइवेट, सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी या सहकारी सोसायटी के तौर पर भी शुरू किया जा सकता है। यदि किसी की भागीदारी में कंपनी चलानी हो तो इसे इंडियन पार्टनर शिप ऐक्ट, 1932 की धारा 58 के तहत रजिस्ट्रार आफ कोआपरेटिव सोसायटी के कार्यालय में रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन करना होता है। सरकारी संस्था का रजिस्ट्रेशन कराने के लिए रजिस्ट्रेशन कार्यालय से अथवा किसी अन्य सहकारी संस्था का विधान–प्रपत्र देखकर पूरी जानकारी हासिल की जा सकती है।

इतनी सारी प्रक्रियाएं पूरी करने के बाद आवश्यकता हो तो लघु उद्योगों के लिए विशेष सहूलियतों के साथ सरकार से आर्थिक ऋण के लिए भी आवेदन किया जा सकता है। कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए जिन चीजों की बाजार में कमी की संभावना रहती है उनमें सरकार ने कोटा निर्धारित किया हुआ है। आवेदन करने पर यह कोटा आसानी से स्वीकृत हो जाता है। कोटे वाली वस्तुओं में – सीमेण्ट, पैराफिन वैक्स, कोयला/कोक, सोडा ऐश, ब्लीचिंग पाउडर, सल्फ्यूरिक एसिड जैसी चीजें शामिल हैं। इन चीजों को प्राप्त करने के लिए डिस्ट्रिक्ट आफिसर आफ इण्डस्ट्रीज के कार्यालय में निर्धारित प्रपत्र भरकर आवेदन करना चाहिए।

स्वानंद अपनाइये राष्ट्रधर्म निभाइये

स्वदेशी माल पर लगा गौरव चिन्ह.... स्वानंद।
ऊँचे दर्जे के स्वदेशी माल की पहचान.... स्वानंद।
उत्पादन – ग्राहक के परस्पर विश्वास का प्रतीक.... स्वानंद।
स्वदेशी और स्वराज एक ही सिक्के के दो पहलू है

भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत बनाए रखने के लिए, हमारे उद्योग, हमारी संस्कृति टिकाए रखने के लिए स्वदेशी अपनाना हमारा कर्तव्य बनता है, और स्वदेशी अपनाने के लिए सबसे आसान रास्ता है.... स्वानंद

"स्वानंद पीठम" के मुख्य उद्देश्य हैं....

- इस देश में हर हाथ को काम मिले
- इस देश में केवल ऊँचे दर्जे के माल का ही उत्पादन हो
- इस देश का व्यापारी स्वदेशी माल की बिक्री करने में गौरव अनुभव करे
- इस देश का उपभोक्ता केवल स्वदेशी माल खरीदकर राष्ट्रधर्म निभाए
- इस देश का उद्योग विश्व में स्पर्धा योग्य बने

स्वानंद पीठम की ओर से स्वदेशी उत्पादन की प्रयोगशाला में गहरी जाँच करके प्रमाणीकरण प्रदान किया जाता है. प्रमाणीकरण प्राप्त करने पर उत्पादक अपने माल पर स्वानंद की मोहर लगाकर उसे ऊँचे दर्जे के स्वदेशी माल की पहचान दिला सकते हैं. परंतु स्वानंद केवल मानक नहीं है, वह तो है एक गौरव चिन्ह जो पहचान दिलाएगा हमारे राष्ट्रीय चारित्र्य की।

स्वानंद से क्या फायदा?

स्वानंद चिन्ह लगने से..... • ग्राहक को स्वदेशी माल पहचानना आसान होगा।
- माल की बिक्री बढेगी।
- देश की संपत्ति देश में रहेगी।
- राष्ट्रहित की रक्षा होगी।
- उत्पादक का सम्मान बढ़ेगा।

अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें–
श्री सुरेश पिंगले,
स्वानंद अनुसंधान पीठम, 440, यशोधाम, विद्यापीठ मार्ग (मफतलाल बंगले के पीछे), पुणे (महाराष्ट्र) – 411017 फोन–5658

स्वरोजगार के प्रशिक्षण शिविरों में भाग लें

आजादी बचाओ आंदोलन पिछले 8–10 वर्षों से विदेशी कंपनियों के खिलाफ लगातार जनजागृति और संघर्ष का काम करता रहा है। शुरूआत के 3–4 वर्षों में आंदोलन बहुत व्यापक नहीं था। न तो आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि बहुत व्यापक थी और न ही आंदोलन का विस्तार। 1995 के बाद से धीरे–धीरे आंदोलन ने लोगों के बीच अपनी उपस्थिति का आभास कराना शुरू कर दिया। शुरूआत में तो आंदोलन केवल उत्तर प्रदेश और उसके आस–पास के क्षेत्र में ही सक्रिय था। लेकिन 1995 के बाद महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान में सक्रियता शुरू हुई। 1998 के बाद तो इन राज्यों के अलावा कर्नाटक, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश जैसे दक्षिण भाषी इलाकों में भी आंदोलन बहुत तेजी से फैला।

विदेशी कंपनियों के सामानों का बहिष्कार करवाने के लिए गाँव–गाँव घूमने के दौरान नये–नये अनुभव हुए। अधिकांश अनुभवों में ऐसा महसूस होता था कि हिन्दुस्तान के गाँवों में रहने वाली आबादी शहरी विकास से बहुत दूर है। इसका सबसे बड़ा कारण यह समझ में भी आया कि देश का विकास शहर केंद्रित विकास है। इसलिए इस विकास में गाँव की उपेक्षा स्वाभाविक है।

गाँव के सभी तरह के संसाधन शहर की ओर जा रहे हैं। गाँव के नौजवान क्या बूढ़े तक शहरों में काम करने के लिए जाते हैं और न्यूनतम मजदूरी पर काम करते हैं। शहरों में उनका शोषण ही होता है।

इसलिये हमें लगने लगा कि अब हमें अपने आंदोलन की दिशा बदलनी पड़ेगी। अभी तक तो हमारे आंदोलन में केवल विदेशी कंपनियों के बहिष्कार की बात दिखाई देती थी। लेकिन अब आंदोलन स्वदेशी उत्पादकों की फौज का निर्माण करने के लिए एक नई दिशा की ओर बढ़ने के लिए तैयार है।

यह दिशा स्वदेशी और स्वावलंबन की दिशा होगी। जिसमें आंदोलन गाँव–गाँव में जाकर नौजवानों को स्वदेशी रोजगार के लिए तैयार करेगा और उन्हें अपने जीवनयापन के लिए आवश्यक आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लायक बनायेगा। इस अभियान में आंदोलन जगह–जगह स्वावलंबन शिविरों का आयोजन भी करेगा, जिसमें नौजवान प्रशिक्षित होकर निकलेंगे और देश भर में स्वदेशी की अलख जगाएंगे। गाँधीजी के स्वदेशी भारत का सपना यही नौजवान साकार करेंगे।

प्रशिक्षण का स्वरूप

1. प्रशिक्षण शिविर वर्ष में तीन बार लगाये जायेंगे। ये तीनों शिविर देश के अलग–अलग भागों में लगेंगे।

2. प्रशिक्षण शिविर 15 दिन का होगा। इन 15 दिनों में स्वदेशी उत्पाद की निर्माण प्रक्रिया, रोजगार के लिए धन की व्यवस्था करना, बाजार में अपने उत्पाद को बेचने की कला का प्रशिक्षण, और आवश्यक आय–व्यय संबधी बातों का ज्ञान कराया जायेगा। इसके अलावा प्रशिक्षणार्थी को स्वदेशी विचार से परिपूर्ण करने की कोशिश की जायेगी।

3. इन प्रशिक्षण शिविरों में प्रवेश लेने के लिए आंदोलन की स्थानीय समिति की मंजूरी आवश्यक होगी। अर्थात् स्थानीय समितियां ही प्रशिक्षणार्थियों का चयन करेंगी।

4. प्रशिक्षण शिविर का शुल्क न्यूनतम होगा।

5. प्रशिक्षण शिविर में देश के उन प्रतिष्ठित उत्पादकों को भी बुलाया जायेगा जिन्होंने अपनी मेहनत से अपना व्यापारिक प्रतिष्ठान खड़ा किया है। वे प्रशिक्षणार्थियों को अपने अनुभव का लाभ देंगे।